ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्षः 68 अंकः 4 अप्रैल, 2017

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2074 बैसाख की अमावस्या

लगेगी-25.4.2017, मंगलवार, रात्रि 9.07 बजे

उतरेगी-26.4.2017, बुधवार, सायं 5.45 बजे

सम्वत् 2074 ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी- 24.5.2017, बुधवार, देर रात 5.07 बजे

अर्थात् 25.5.2017, गुरुवार, को सूर्योदय से 45 मिनट पूर्व

उतरेगी-25.5.2017, गुरुवार रात्रि 1.14 बजे

सम्वत् 2074 बैसाख की अमावस्या

लगेगी-23.6.2017, शुक्रवार, प्रातः 11.00 बजे

उतरेगी-24.6.2017, शनिवार, प्रातः 8.00 बजे

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-62	4
सम्पादकीय	6
साखी	7
बिश्नोई-विलक्षण अहिंसा का धर्म	8
भक्ति आन्दोलन में गुरु जाम्भोजी का योगदान	11
धर्म का स्वरूप	15
आध्यात्मिकता में सभी समस्याओं का समाधान	17
आओ हम अपने को समझें ?	18
अहिंसा परमो धर्म:	19
मुश्किल नहीं गिर कर उठना	20
बधाई सन्देश	21
जांभाणी हरजस: राग खंभावची व राग धनांसी	22
लोक साहित्य: बिश्नोई लोकगीत	23
बाल कविताएँ	24
कैरियर: सेरेमिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कैरियर	25
जम्भेश्वर सुजस, ना भूलो परमेश्वर का ध्यान, मेरा संदेश	27
पर्यावरण रक्षन्तु: पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ विकास	28
विज्ञान भवन, दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय जाम्भाणी सम्मेलन...	31
मुक्तिधाम मुकाम का मेला फाल्गुन वर्ष 2017	35
पंचकूला मंदिर में मनाया 12वां स्थापना दिवस	37
बिश्नोई समाज के पर्यावरण प्रेमियों ने...	38

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबदवाणी

सबद 62

अरिल

दोशण अठारे एह कह्या, जम्भ हुय राम जी।
लक्ष्मण लागी चोट, कहो किण काम जी।
कहो कियो काहा पाप, सक्त लागी सही।
कहै जमाती जंभ, वाणी सच्ची वही।
मानुष जोनी पायके, इह नहि करिये पाप।
राम रूप होय बोलिया, सच्चे सतगुरु आप।

ऊपर के सबदों को श्रवण करके जमाती लोगों ने फिर पूछा कि हे देव! आप यह बतलाने की कृपा करें कि लक्ष्मण को शक्ति बाण क्यों लगा? लक्ष्मण यति से क्या भूल हो गई। जिसके पाप से इतना कष्ट सहन करना पड़ा। तब जम्भेश्वर जी ने अठारह दोष गिनाएं हैं और बताया है कि उनमें से एक भी दोष को मानव कर देता है उसे उसी प्रकार से भुगतना पड़ता है। इसलिये ऐसा दोष-पाप युक्त कर्म न करें। उसी समय श्री देवजी ही राम रूप में थे। वहां की घटना का सबद द्वारा चित्रण कर रहे हैं-

सबद-62

ना मैं कारण किरिया चूक्यौ, ना मैं सूरज साम्हों थूक्यों।
ना मैं ऊभै कांसा मांज्या, ना मैं छान तिणूका खैंच्या।

भावार्थ- लक्ष्मण ने उपर्युक्त अठारह दोषों के प्रश्न का उतर देते हुए कहा- हे राम! न तो कभी भी भूल करके किसी कारण क्रिया में ही चूक की है, न ही कभी सूर्यदेव के सामने थूक करके अपमान ही किया है। न ही खड़े होकर भोजन करके बर्तन ही साफ किये हैं और न ही किसी गरीब की झोंपड़ी ही तोड़ी है।

ना मैं ब्राह्मण निवत बहोड़्या,
ना मैं आवा कोरंभ चोर्‌या।
ना मैं बाड़ी का वन फल तोड़्या,
ना मैं जोगी का खप्पर फोड़्या।

न तो मैंने ब्राह्मण को निमंत्रण देकर भूखा रखा है, न ही मैने कभी कोई कुम्हार का कच्चा घड़ा ही चुराया है। न ही मैंने कभी किसी बाड़ी का फल बिना पूछे तोड़ा है और न ही योगी का खप्पर ही फोड़ा है।

ना मैं ब्राह्मण का तागा तोड़्या, ना मैं वेर विरोध धन लोड़्या।

ना मैं सूवा गाय का बच्छ बिछोड़्या, ना मैं चरती पिवती गऊ बिडारी।

न ही मैंने ब्राह्मण को वस्त्र दान देने से मुख मोड़ा है। सदा देना ही मेरा धर्म रहा है और न ही वैर विरोध द्वारा धन प्राप्त किया है अर्थात् अनीति द्वारा धन प्राप्त कभी नहीं किया। न ही मैंने नयी ब्याही हुई गऊ से उसके बच्चे को विछोह किया। ना ही मैंने वन में निर्द्वन्द्व घास चरती जल पीती हुई गऊ को ही डराकर भगाया है।

ना मैं हरी पराई नारी,
ना मैं सगा सहोदर मार्‌या।
ना मैं तिरिया सिर खड़ग उभार्‌या,
ना मैं फिरतै दांतण कियो।

ना मैं रण में जाय दों दीयो,
ना मैं बाट कूट धन लीयो।

न तो मैंने पराई नारी का हरण किया। न ही मैंने कभी किसी सगे-सम्बन्धी को ही मारा। न ही मैंने कभी किसी स्त्री को मारने के लिये उसके सिर पर घातक तलवार उठाई। न ही मैंने कभी चलते-फिरते बातें करते भोजन किया या दांतुन की। न ही मैंने युद्ध भूमि में जाकर अपने स्वामी को धोखा देकर वापिस भागा और न ही मैंने कभी किसी से अपने बाहुबल से धन ही लूटा है। हे राम! इन अठारह दोषों में से मैंने एक भी दोष नहीं किया।

एक जूं ओगण रामै कीयो,
अणहुंतो मिरघो मारण गइयो।
दूजो ओगण रामै कीयो,
एको दोष अदोषां दीयो।

लक्ष्मण को यदि शक्ति बाण लगने से मूर्च्छा आ जाती है तो उस स्थिति में लक्ष्मण से भी अधिक दु:ख राम को होता है। इसलिये लक्ष्मण तो कुछ भी विलाप नहीं करते किन्तु राम बहुत ही विलाप करते हुए दिखाई देते है। पाप या दोष का फल दु:ख होता है यहां पर लक्ष्मण से भी ज्यादा दु:ख राम को हुआ है। इसलिये ऐसा मालूम पड़ता है कि दोष लक्ष्मण ने नहीं किये। यदि कोई दोष या असावधानी हुई है तो राम से हुई है। लक्ष्मण के शक्ति बाण लगना तो राम को उनके कर्मों का फल भोगने के लिये ही था। कहा भी है-

असंभवं हेम मृगस्य जन्म तथापि रामों लुलुभे मृगाय।
प्राय: समापन्न विपति काले धीयोअपि पुसां मलिनां भवन्ति।

स्वर्ण मृग नहीं हो सकता फिर भी राम के लोभ ने उसकी प्राप्ति के लिये प्रेरित किया। प्राय: यह देखा गया है कि विपत्ति काल में बुद्धिमान मनुष्यों की बुद्धि भी मलीन हो जाती है। इसी बात को गुरु जम्भेश्वर जी कहते है कि उस समय लक्ष्मण ने कहा कि हे राम! मैंने कोई अवगुण नहीं किया है। हां आपने तो पहला दोष ना समझी तो यह की कि सोने का मृग नहीं हो सकता परन्तु आप इतनी सी बात नहीं समझ सके और उसे मारने के लिये दौड़ पड़े तथा दूसरी भूल यह की कि उस राक्षस की करुणामयी पुकार को न तो आप समझ सके और न ही सीता ही। मुझे सीता माता ने कटु वचन कहे, मैं भी निर्दोष था। मुझे दोष रहित जन को आपने तथा सीता ने दोष दिया। मैं क्या करता? आपकी आज्ञा स्वीकार करता या सीता की? सीता ने मुझे विशेष रूप से वचन बाणों द्वारा घायल किया। जिससे मैं आपके पास आ गया, सीता अकेली रह गई। इसी कारण से सीता का हरण हुआ और हमें यहां इन परिस्थितियों से सामना करना पड़ा।

वन खंड में जद साथर सोइयों,
जद को दोष तदो को होइयों।

तथा सबसे बड़ा दोष तो हम लोगों का यह था कि वहां वन में हम निवास करते हुए, साथ में रहते हुए सचेत नहीं हो सके। हमें मालूम ही था कि यहां पर राक्षसों का भी साथ में ही निवास है तथा उनसे वैर भाव ही मोल ले चुके है। हमें निर्भय होकर नहीं सोना है। सदा सचेत रह करके अपनी रक्षा करनी थी। वह हम नहीं कर सके। इसीलिये हमें आज यह दिन देखने को मिला। हम दोनों भाई, जानकी तथा यह वानर सेना सभी विपत्ति में पड़ चुके हैं। थोड़ी सी असावधानी बहुत बड़ी विपति का कारण बनी है। हे राम! उस वनवास समय की भूल ही हमारे दु:ख का कारण है। आप चाहे मुझे दोष दे या निर्दोष सिद्ध करें मुझे स्वीकार है। इन शब्दों द्वारा जम्भेश्वर जी ने रामायण के इस महत्त्वपूर्ण पहलू का समाधान किया है। जो एक नयी उद्‌भावना युक्ति मालूम पड़ती है।

- साभार 'जंभसागर'

सम्पादकीय

गुरु बिन मुक्त न जाई

भारतीय दर्शन में मुक्ति अर्थात् मोक्ष को मानव जीवन का चरम लक्ष्य घोषित किया गया है। मनुष्य जीवन प्राप्त करने की सार्थकता इसी में है कि हम कुछ ऐसे कार्य करें, जिससे जीवात्मा को मोक्ष प्राप्त हो जाये और आवागमन के चक्कर से मुक्ति मिल जाए। यदि मनुष्य तन प्राप्त करके हम यह कार्य नहीं करते तो इसका अर्थ है कि हमने विशेष कुछ भी नहीं किया क्योंकि हम जो शेष कार्य करते हैं वे तो अन्य पशु-पक्षी भी करते हैं, फिर मनुष्य जीवन प्राप्त करने का लाभ क्या हुआ? मनुष्य के पास परमात्मा का दिया हुआ 'बुद्धि' रूपी अनूठा उपहार है, जिससे वह करणीय-अकरणीय का विचार कर सकता है तथा करणीय को करते हुए मोक्ष लाभ को प्राप्त कर सकता है। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि सभी मनुष्य ऐसा कर क्यों नहीं पाते? इसका कारण यह है कि मनुष्य एक भ्रमित होने वाला जीव है, वह सांसारिक मोह-माया के जाल में उलझकर अपने वास्तविक पथ से भटक जाता है और परिणामस्वरूप उसका अमूल्य जीवन व्यर्थ चला जाता है। अब फिर प्रश्न उत्पन्न होता है कि उसे यह वास्तविक पथ दिखायेगा कौन? इसका उत्तर है-'गुरु'।

यही कारण है कि मनुष्य के जीवन में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। सभी धर्म ग्रंथों, संतों व गुरुओं की वाणी में गुरु महिमा का बखान किया गया है। कई स्थानों पर तो गुरु को भगवान से भी बड़ा बताया गया है। यह सब अकारण ही नहीं कहा गया है। वास्तव में गुरु का मनुष्य के जीवन में बहुत बड़ा महत्त्व है। गुरु ही वह कुशल कारीगर होता है जो शिष्य के जीवन को संवारता है तथा भ्रम की श्रृंखला को तोड़कर अपने शिष्य को मोक्ष पथ पर आरूढ़ करता है। अज्ञान का पर्दा हटाकर ज्ञान का द्वार खोलने की कुञ्जी केवल गुरु के पास होती है। बिना इस द्वार के खुले मनुष्य पशुसम ही होता है। गुरु ही करणीय-अकरणीय का विवेक जागृत करता है। यही कारण है कि गुरु जम्भेश्वर जी ने भी 'गुरु' की महिमा का बखान अपनी 'सबदवाणी' में अनेक स्थानों पर किया है। उनकी वेदमयी वाणी का प्रारंभ ही 'गुरु' शब्द से होता है- **'गुरु चीन्हो गुरु चीन्ह पुरोहित'**। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने अपनी वाणी में शताधिक बार गुरु की चर्चा की है तथा मनुष्य के जीवन में 'गुरु' के महत्त्व को रेखांकित किया है।

मानव जीवन में जितना आवश्यक गुरु को धारण करना है उतना ही आवश्यक है गुरु के गुणों को परखना। यदि कोई व्यक्ति गुरु के लक्षणों पर खरा नहीं उतरता और उसे हम गुरु धारण कर लेते हैं तो हमें लाभ के स्थान पर हानि ही प्राप्त होगी। इसलिए गुरु जाम्भोजी ने अपने प्रथम 'सबद' में ही गुरु के लक्षणों की विस्तृत व्याख्या की है तथा पुरोहित के माध्यम से मनुष्य मात्र को सचेत किया है कि पहले गुरु को पहचानो और फिर धारण करो। वर्तमान परिस्थितियों में गुरु महाराज के इन वचनों का महत्व और गुरु बिन मुक्त न जाई अधिक बढ़ गया है। इसके साथ-साथ हमें गुरु महाराज के इन वचनों पर भी ध्यान देना चाहिए कि बिना गुरु के मार्गदर्शन के मनुष्य को सद्पथ और मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती-**'गुरु बिन मुक्त न जाई'**।

साखी

कवि जोधो रायक कृत साखी

सार हंस राजा हो जी, बैठो तखत रचाय।1।
गुण बेलड़ियां हो जी, तुम कित बसियां रात।2।
हम वासो वसियो हो जी, खालक के दरबार।3।
हमें काम पड़यो हो जी, मोमण था शुचियार।4।
मोमण आवैला हो जी, कर कुरज्यां ज्यों डार।5।
मोमण मिलैला हो जी, लांबी-लांबी बांह पसार।6।
मोमण बैसेला हो जी, हंसा रै उणियार।7।
मोमण बोलैला हो जी, कर मोरा जां झिंगार।8।
भुंय लाधी छै हो जी, जे कण ल्योह निपाय।9।
कण चुणि चुण्य ल्यो हो जी, राच्यो न रहो संसार।10।
राजा कर्ण भलो थो हो जी, कंचन को दातार।11।
राजा विदुर भलो थो हो जो, साहेब को शुचियार।12।
जीवड़ा के काजे हो जी, राजा हरिचंद बेची नार।13।
पांचुं पाण्डु भला था हो जी, धन्य कुंता दे माय।14।
ढहि वृक्ष पड़ैला हो जी, धरण सहै भूंय भार।15।
जमला जागैला हो जी, कांसी के झणकार।16।
जोधो रायक बोलै हो जी, कलि दसवै अवतार।17।

भावार्थ- हे देव! आप तो सार रूप हंस राजा हो। जिस प्रकार पक्षियों का सर्वश्रेष्ठ राजा हंस होता है। उसी प्रकार आप भी तो मनुष्यों के राजा हो। इसलिये आप यहीं संभरा नगरी पर ही आसन लगाकर बैठो जी।1। हे देव! आप तो गुणों की बेलड़ियां हो जी, जिस प्रकार नागर बेल दिन दुनी रात चौगुनी बढ़ती है और सुवासित करने वाली है उसी प्रकार आप भी तो आगन्तुक मोमणों को आनन्दित करते हो। आपका यश भी उतरोतर बढ़ता ही जा रहा है। आप इतने दिनों तक कहां रहे। आपके बिना तो यहां मानो दिन भी रात्रि जैसा ही था।2। हमने तो परमात्मा के दरबार में ही रात्रि में निवास किया है। हमारा अन्य कुछ भी कार्य यहां आने का नहीं था। हम तो उस परमात्मा के भक्त बनकर शरण ग्रहण करने के लिये यहां आये है।4। अन्य भी भक्त अवश्य ही आयेंगे जिस प्रकार कुरज पक्षी पंक्ति बनाकर एक स्वर में मधुर गाना करती हुई उड़ती है उसी प्रकार प्रिय भक्त भी एक पंक्ति बनाकर सुमधुर करूणामय गायन करते हुए आयेंगे जी।5। यहां सम्भराथल पर आकर मोमण आपस में एक-दूसरे का आलिंगन लंबी-लंबी भुजाएं फैलाकर करेंगे। उस समय उनका प्रेम देखते ही बनेगा।6। तथा भक्तजन यहां सम्भराथल पर देव दर्शनार्थ आयेंगे। जिस प्रकार हंस मान सरोवर पर आते हैं और बैठे हुए शोभायमान होते हैं उसी प्रकार भक्त भी इस सम्भराथल पर शोभायमान होंगे।7। यहां पर बैठकर शब्दोच्चारण करेंगे जिस प्रकार मयूर बोलते है। सभी भक्त तेजस्वी है उनकी ध्वनि भी उच्च स्वर एवं मधुर है।8। इस समय ज्ञानी भक्तों को सुधरी हुई धरती का खेत मिल गया है इसमें अपनी इच्छानुसार कण तत्व की उपज कर सकेंगे अर्थात् सतगुरु की प्राप्ति हो चुकी है इसलिये अब तत्व की प्राप्ति कर लेंगे।9। हे भक्तों! अब ज्ञान रूपी कण इधर-उधर बिखर रहा है इसलिये चुन करके एकत्रित कर लो। जीवन में ज्ञान को स्थान दो केवल संसार की मोह माया में ही अटके मत रहो।10। राजा कर्ण अच्छा दानी था जिन्होनें स्वर्ण का ही दान दिया तथा विदुर भी वैसा ही महादानी था जो साहब भगवान का प्रिय भक्त तथा बड़ा ही पवित्रात्मा था।11। अपने जीव की भलाई के लिये सत्य का पालन करते हुए हरिश्चन्द्र ने अपनी प्रिया भार्या को ही बेच डाला था।13। इसी प्रकार से पांच पाण्डव भी बहुत ही उच्चकोटि के महापुरुष हुए तथा उनकी माता कुन्ती को भी बार-बार धन्य है जिन्होंने ऐसे पुत्र रत्न पैदा किये तथा उन्हें संस्कारित करके योग्य बनाया।14। जिस प्रकार वृक्ष सूख जाता है तो धरती में ही विलीन हो जाता है उसी प्रकार से यह शरीर भी अन्त में धरती में ही मिल जाता है।15। जब शरीर गिर पड़ेगा तो यमदूत भी जाग जायेंगे, सचेत हो जायेंगे और जीव को पकड़कर ले जायेंगे। जीव भी जिस प्रकार से कांसी की आवाज कांसी में ही समा जाती है और चोट करने पर प्रगट होती है उसी प्रकार जीव का भी आवागमन होता है। कहा भी है-''कंसे शब्दे कंस लुकाई, बाहर गयी न रीऊं''। जोधोजी रायक कहते हैं कि सम्भराथल पर इस समय कलयुग में यह दसवां अवतार हुआ है।

- साभार साखी भावार्थ प्रकाश

बिश्नोई-विलक्षण अहिंसा का धर्म

यस्य स्मरणमात्रेण जन्म संसार बन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥

भगवान श्री जाम्भोजी ने जब अवतार ग्रहण किया उस समय विश्व की आध्यात्मिक राजधानी भारतवर्ष की काया लहूलूहान हो चुकी थी। विदेशी आक्रांताओं के भीषण आक्रमणों और लूट ने जहाँ भारत की राजनैतिक और आर्थिक शक्ति का ह्रास किया, वहीं बलपूर्वक धर्मान्तरण ने धार्मिक और सामाजिक ताने- बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया। आग लगने से उजड़े हुए अपने घर के अवशेषों और मलबे के ढेर से उड़ते हुए धुएं को देखकर घर के मालिक की जो दशा होती है, वही दशा समराथल के ऊँचे टीले पर बैठे श्री जाम्भोजी की थी। जनमानस में थोड़ा बचा हुआ धर्म भी जर्जरित था। आगे आने वाली सदियां इनसे भी भयंकर आने वाली थी।। ऐसे तूफान में समराथल पर उस धर्म का दीपक जलाना था, जिसका पालन सतयुग, त्रेता और द्वापर में क्रमशः प्रह्लाद, हरिश्चन्द्र और युद्धिष्ठर ने किया था। पूर्व में हुए इन तीनों महापुरुषों के जीवन पर नजर डालें तो इनका स्वभाव हमें सौम्य, मृदुल, उदार, दयालु, सहनशील, दृढ़ विश्वासी, कठोर तप और सच्चाई वाला मिलेगा। ऐसे ही लोग इस चौथे युग में तैयार करने थे गुरु जाम्भोजी को। जाम्भाणी साहित्य के विपुल भण्डार में बिश्नोई सन्त कवियों की रचनाओं और ऐतिहासिक घटनाओं का अवलोकन करें तो हमें पता चलेगा कि गुरु जाम्भोजी ने अपना कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किया था। इतिहास की पिछली पांच शताब्दियों में विश्व में भयंकर मार-काट मची रही और कमोवेश आज की परिस्थितियां भी कुछ अच्छी नहीं हैं। ऐसे समय में वृक्ष का एक पत्ता टूटने का अफसोस करने वाले लोग भी इस धरती पर हैं। जब दुनियां परस्पर वाद-विवाद, द्वेष, षडयंत्र और लड़ाई-झगड़े में उलझी है। गरीब भूख से बिलबिला रहा है, अमीर भयाक्रांत है, पूरे विश्व में भय और तनाव व्याप्त है। किसी धर्म का सन्देश विश्व-शान्ति, अहिंसा और आपसी सद्भाव होता है, पर सच्चाई यह है कि इस वसुन्धरा को इसके मानव पुत्रों ने सबसे अधिक बार धर्म के नाम पर ही रक्त से सींचा है। धर्म के नाम पर छल-प्रपंच पाखण्ड, मनमानी व्याख्या, झूठ-कपट से लोगों का दम घुटने लगा है। ऐसे समय में श्री गुरु जाम्भोजी का सरल, सारगर्भित और कल्याणकारी उपदेश लोगों को इस ब्रह्माण्ड के सबसे सुन्दर ग्रह पर सुन्दर तरीके से रहने की युक्ति बताता है।

आपका होना किसी के कष्ट का कारण न बने और किसी के कष्ट निवारण के लिये आपका होना काम आ जाये, यही है श्री जम्भेश्वर-दर्शन का मूल। परहित के यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देने वालों का समूह बिश्नोई समाज -

अहिंसा परमो धर्मो अहिंसा परमं सुखम्।
अहिंसा धर्मशास्त्रेषु सर्वेषु परम पदम्॥ (महाभारत)

'अहिंसा परम धर्म पर। अहिंसा परम सुख है, सम्पूर्ण धर्म शास्त्रों में अहिंसा को परमपद बताया गया है।

विद्यालयों के पाठ्यक्रम की पुस्तकों में यह पढ़ाया जाता है कि आदि मानव वनों में रहता था और अग्नि का आविष्कार होने से पहले वह जानवरों को मारकर उनका कच्चा मांस खाता था, एक दिन अचानक पत्थर आदि के घर्षण से अग्नि उत्पन्न हुई और वह मांस पका कर खाने लगा। इसके लिये पाषाण आदि युगों का निर्धारण भी इतिहासकारों ने किया है। हालांकि हिन्दू धर्म शास्त्र इन मनोकल्पित बातों को नहीं मानते। वैदिक संस्कृति डार्विन के विकासवाद, मछली या बन्दर से मनुष्य की उत्पत्ति तथा मनुष्य के पूर्वजों के मांस भक्षण की बात सिरे से नकारती है। मनुष्य एक पूर्ण विकसित जाति है और आदि से लेकर अन्त तक वह एक जैसी ही रहती है। इस पृथ्वी पर जब मनुष्य की उत्पत्ति हुई तब वह वैदिक ऋषि था, वह प्रारम्भ से ही सदाचारी और धर्मसम्मत जीवन जीने वाला व्यक्तित्व था। उसके जन्म के साथ ही इस पृथ्वी पर प्रत्येक प्रकार के कन्द, मूल, फल, अन्न आदि की उत्पत्ति हो चुकी थी और इनके प्रयोग का भी उसे नैसर्गिक ज्ञान था।

मनुष्य के जीवन में हिंसा का प्रवेश कब और कैसे हुआ, यह अज्ञात है और बाद में यह इतना व्यापक हो गया कि इसने धर्म को भी अपनी चपेट में ले लिया तथा यज्ञादि में पशुबलि का प्रचलन हो गया। जब भारतवर्ष में अग्निश्वरवादी मतों का प्रादुर्भाव हुआ तो हिंसा का भाव तो कम हुआ पर वैदिक धर्म लुप्तप्राय हो गया। भक्तिकाल के संतों ने नामजप पर अधिक जोर दिया पर गुरु जाम्भोजी ने नामजप के साथ वैदिक परम्परा को पुनः प्रतिष्ठित किया। शास्त्र वचन के अनुसार यज्ञ करने से देवता तृप्त होते हैं जो कि यज्ञकर्ता के सुख-समृद्धि के कारक हैं, आज का विज्ञान कहता है कि यज्ञ करने से प्रकृति के पांचों तत्व-अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी पुष्ट होते हैं, जो कि देवता ही है। प्रकृति के तुष्ट होने पर उसका पुरुष परमात्मा संतुष्ट होता है जो यज्ञकर्ता के लौकिक सुख के साथ उसका परलोक भी संवारता है। यज्ञकर्ता सदा ही अग्निशिखा की भांति उच्च नैतिक मूल्यों व प्रगतिशील विचारों का स्वामी तथा तेजस्वी होता है, उसके वर्तमान क्रिया-कलापों तथा भविष्य की योजनाओं में सुख, शान्ति व आनन्द से परिपूर्ण विश्व की संकल्पता रहती है, जो कि हिंसादि दोषों से दूर एक संवेदनशील वातावरण में रहना पसन्द करता है। ऐसा ही है गुरु जाम्भोजी का एक पूर्ण बिश्नोई।

लाखों रुपये खर्च करके एवं तमाम व्यवस्था करके किसी नगर में 51 या 108 या इससे कम-ज्यादा कुण्डियों का यज्ञ किया जाता है, जो विश्व शान्ति के निमित्त होता है। सौभाग्य से किसी स्थान को यह अवसर वर्षों बाद मिलता है।

अगर भारत के सभी बिश्नोई घरों की गणना करें तो हजारों कुण्डीय यज्ञ यह समाज नित्यप्रति कर रहा है। यह है बिश्नोई का हिंसक वृत्तियों के निवारणार्थ वैश्विक शान्ति का अद्वितीय सद्प्रयास।

प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखने का भगवान श्री जाम्भोजी का उपदेश उनको मानने वालों ने ऐसा घोटकर पी लिया कि सम्प्रदाय के पांच सौ वर्षों के इतिहास में अनेकों बार ऐसे अवसर उपस्थित हुए जब इन लोगों ने परहित के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इन लोगों की विलक्षण बात यह है कि इनका परहित का क्षेत्र बहुत व्यापक है, जिसमें मूक प्राणी और वृक्ष भी शामिल है। जिनका दर्द इन्होंने समझा और उन्हें अपने परिवार का सदस्य मानकर प्यार दिया। चराचर प्राणियों को अभयदान देना ही तो धर्म का उत्तम लक्षण है।

सर्व भूतेषु यः सम्यत्र ददात्यभयदक्षिणाम्।
हिंसा दोष विमुक्तात्मा स वै धर्मेण पुज्यते॥
सर्वभूतानुकम्पी यः सर्वभूतार्यव व्रत।
सर्वभूतात्म भूतश्च स वै धर्मेण युज्यते॥ (महा.)

'जो हिंसा-दोष से मुक्त होकर सम्पूर्ण प्राणियों को अभयदान कर देता है, उसी को धर्म का फल प्राप्त होता है। जो सम्पूर्ण प्राणियों पर दया करता है, सबके साथ सरलता का बर्ताव करता है और समस्त भूतों को आत्मभाव से देखता है, वही धर्म के फल से युक्त होता है।'

इस शास्त्र वचन के अनुसार अगर यही धर्म का फल है तो बिश्नोई समाज इस कसौटी पर पूरा खरा उतरता है। इस समाज के पास इस धर्म को पुष्ट करने की लम्बी परम्परा है। यह विक्रम संवत् 1650 से शुरू होता है। कूदसूं, तिलवासणी, रामासड़ी, पोलावास, कापड़हेड़ा, जाम्भोलाव और खेजड़ली का महाबलिदान और इसके अतिरिक्त ज्ञात-अज्ञात रूप में सैंकड़ों बार बिश्नोई जनों ने स्वेच्छा से अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। किसी वन्य प्राणी और वृक्षों की रक्षा के लिये मरना तो बिश्नोई का स्वभाव है ही इसके अलावा किसी प्रकार का अन्याय या झगड़े-फसाद को बन्द करवाने के लिये भी इन्होंने सहर्ष बलिदान दिया है। हिंसा की आग को बुझाने के लिये इन्होंने अपना शरीर पानी बनाकर बहा दिया। जरा कल्पना करें खेजड़ली महाबलिदान की जब कुल्हाड़ी चलने वाले हाथ थक गये पर ये लोग नहीं थके। कहीं किसी से कोई शिकायत, द्वेष, रोष या प्रतिहिंसा की भावना इनके मन में नहीं रही। किसी ने हाथ उठाकर जरा रूकने के लिये भी नहीं कहा, अन्यथा तो हजारों लोगों के सामने कितने सैनिक रहे होंगे। एक वृक्ष के लिये सिर कटाने के बाद भी बिश्नोई सोचता है कि इस वृक्ष के उपकार के बदले में मैं इसे कुछ और भी दूं, क्योंकि सिर की कीमत पर इसे बचाने का सौदा तो सस्ता है। (सिर साटै रूंख रहे तो भी सस्तो जाण)।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति से शौर्य चक्र और भारत सरकार व राज्य सरकारों से विभिन्न पर्यावरण पुरस्कार वर्तमान समय में अहिंसा के पुजारी इन विलक्षण सत्याग्रहियों को मिल चुके हैं। बीसवीं सदी में महात्मा गांधी ने विश्व को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। पराई पीर जानने वाले बापू के प्यारे 'वैष्णव जन' बिश्नोई के सिवाय और कौन है ? दुर्भाग्य से प्रचार के अभाव के कारण अपने पूरे जीवन में महात्मा गांधी बिश्नोई परम्परा और साहित्य के सम्पर्क में नहीं आये वरना आज से सौ साल पहले इस अद्भुत बिश्नोई जीवन पद्धति का परिचय विश्व को मिल जाता और निश्चय ही बापू को गर्व होता कि आज के जिस अहिंसा, सत्य, करुणा, सादगी और पवित्रता जैसे सिद्धान्तों की रक्षा और प्रचार के लिए अपना जीवन होम कर रहे हैं। इसका उपदेश तो पन्द्रवीं शताब्दी में भगवान श्री जाम्भोजी ने इस भारत भूमि पर ही दिया था और श्री जाम्भोजी के अनुयायियो ने ठीक बापू की तरह इन आदर्शों का प्रयोग भी अपने जीवन में करके दिखलाया है। काश ! बापू यह जानते तो टॉलस्टॉय या किसी अन्य पश्चिमी विभूति से पहले बापू के आदर्श श्री जाम्भोजी होते।

'न हिंस्यात् सर्वभूतानि- किसी भी प्राणी की हिंसा न करें।'

सन्तस्त एवं ये लोके पर दुःख विदारणाः।
आर्ता नामार्ति नाशार्थ प्राणा येषां तृणोपमा॥ (महा०)

संसार में वे ही संत है, जो दूसरों के दुःखों का नाश करते हैं तथा पीड़ित जीवों की पीड़ा दूर करने के लिए जिन्होंने अपने प्राणों को तिनके के समान न्यौछावर कर दिया है।

इस कसौटी पर बिश्नोई पूरा खरा उतरता है। जाम्भाणी साहित्य में अनेक बार कवियों ने बिश्नोई को साधु कहकर पुकारा भी है। हिंसक व्यक्ति के शरीर से कुछ ऐसी तंरगों का प्रवाह निकलता है, जिसे हालांकि इन्सान कम ही अनुभव कर पाता है पर बेजुबान मासूम वन्यजीव भली- भांति महसूस करते है और मासांहारी शिकारी प्रवृति के व्यक्ति की गन्ध सूंघकर दूर भाग जाते है, जबकि वही वन्य जीव बिश्नोइयों के खेतों में उनके बच्चों के साथ खेलते है।

जाम्भाणी साहित्य में बाईस राजाओं के गुरु जाम्भोजी के सम्पर्क में आने का वर्णन मिलता है। दिल्ली के सिकन्दर लोदी का प्रसंग हो, पंजाब के मलेर कोटला या कर्नाटक के नवाब का प्रसंग हो अथवा तो गुरु जाम्भोजी के पास आने वाले हर शासक को, उनका उपदेश कहता कि वे अपने राज्य में जीव हिंसा बन्द करे। दुर्भाग्य से भारतीय इतिहास में इन प्रसंगों का वर्णन नहीं मिलता। भारत का इतिहास सैंकड़ो वर्षों की परतन्त्रता में मनमाफिक और दुराग्रह पूर्वक लिखा गया तो ये घटनाएं भी इसकी भेंट चढ़ गई। हिंसा प्रिय लोगों के समझाते हुए गुरु जाम्भोजी ने कहा कि तुम असहाय जीवों के साथ जोर जबरदस्ती करोगे तो इसका फल तुम्हें अन्त समय में भुगतना पड़ेगा। निर्बल प्राणी पर बलप्रयोग करना अन्याय है। हमारे प्रति अपराध करने वाले को भी हमें क्षमा कर देना चाहिए। दण्ड देने की सामर्थ्य रहते हुए भी क्षमा करना क्षमा रूपी तपस्या है। हमारे प्रति किए गए बुरे बर्ताब को और कहे गये अपशब्दों को अनदेखा और अनसुना कर देना चाहिए- **'देख्या अदेख्या सुण्या असुण्या, क्षमा रूप तप कीजै'** -(सबद 103)

अगर कोई हिंसक बनकर क्रोध की अग्नि भड़काकर आए तो आप पानी बन जाइये। आपके ऐसा करने पर वह शान्त हो जाएगा– **'जे कोई आवै हो-हो कर, आप जै हुइये पाणी'** –(सबद 98)

दूसरा क्या है, क्या कर या कह रहा है, यह देखना हमारा काम नहीं है। हमारा अन्तःकरण राग, द्वेष, काम-क्रोधादि विकारों से रहित हो। हमारे सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक प्राणी शान्ति, सुख और आनन्द का अनुभव करे। ऐसे निर्मल अन्तःकरण का वर्णन सबदवाणी में सर्वत्र मिलता है। 'आत्म शुद्धि के बिना अहिंसा धर्म का पालन सर्वथा असम्भव है– महात्मा गांधी।' विकारी मनुष्य ना तो जीव मात्र के साथ प्रेम रख सकता है, न अहिंसा धर्म का पालन कर सकता है और न ही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है।

प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और दया रखने के विलक्षण उदाहरण संसार में बिश्नोई समाज के अतिरिक्त मिलना दुर्लभ है। जब किसी बिश्नोई से पूछा जाता है कि आप वृक्षों ओर जीवों की रक्षार्थ प्राण देने के लिए क्यों तत्पर हो जाते हो? तो उनके मुहं से निकलता है-''यह हमारा धर्म है।'' अहिंसा को धर्म कहना और उसे प्रयोग में करके दिखाना, यह बहुत बड़ी बात है। अहिंसा की सामान्य परिभाषा में मन, वचन और कर्म से किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाना है, पर बिश्नोई की अहिंसा की विशेष परिभाषा है– किसी पीड़ित जीव के प्रति करुणा का ऐसा सागर उमड़े कि उसमें स्वयं के अस्तित्व को ही डुबो दे।

अपने पास सब कुछ होते हुए भी वह इस जीवन से उब जाता है और जीवन का घात कर लेता है, उसको ऐसा करने के लिए मजबूर करने वाले कारक और उसका परिणाम आत्महत्या, हिंसा की पराकाष्ठा है, यह किसी दो देशों के बीच छिड़े युद्ध में मारे गये लाखों लोगों की हिंसा से भी क्रूर है, क्योंकि युद्ध की हिंसा नियोजित होती है। जरा कल्पना करें उस वैदिक ऋषि की जो भयानक बियावान जंगल में एक वृक्ष के नीचे निवास करता है या अधिक से अधिक उसके पास एक झोपड़ी है, फिर भी वह चैन से रहता है। उसके संसर्ग में रहने वाले हिंसक प्राणी भी हिंसा भूल जाते हैं। हिरण आदि वन्यजीव अपने सींगों से उसकी पीठ खुजलाते हैं, चिड़िया उसके कंधे पर बैठ जाती है और मोर उसके हाथ से दाना चुगता है। किसी महानगर की गगनचुम्बी अटालिकाओं में रहने वालों को ये बातें कपोल कल्पित लगे, पर ये बातें झूठी नहीं है, यह सब सत्य है और इससे बड़ा सत्य यह भी है कि वह वैदिक ऋषि आज भी जीवित है। सुदूर किसी बिश्नोई क्षेत्र की ढ़ाणी में गुरु जाम्भोजी का बिश्नोई आज भी उस वैदिक ऋषि की तरह जीवन जी रहा है। सस्वर सबदवाणी का पाठ करने पर ऐसा लगता है कि वह वेदमंत्रों का उच्चारण कर रहा है। विश्व का सर्वोत्तम, वैदिक परम्परा का अवशेष है यह बिश्नोई धर्म।

मनुष्य हिसंक कब बन जाता है? जब वह अतृप्त, अंसतुष्ट और पराजित होता है। हिंसक मनुष्य विवेक शून्य होता है और ठीक जानवर की तरह व्यवहार करता है। हिंसक मनुष्य क्रूर, कायर, कपटी, विध्वंसक और पलायनवादी होता है, वह कभी रचनात्मक कार्य नहीं कर सकता, वह सुन्दर संसार के सृजन का सहयोगी नहीं हो सकता। हिंसा का एक बड़ा कारण है मनुष्य के अहं को ठेस पहुंचाना। संसार में अधिकांश युद्ध और विध्वंस इसी कारण से हुए हैं। ऐसी परिस्थिति से गुजरे आदमी को जब समझाने का प्रयास किया जाता है तब वह बिफर पड़ता है और कहता है कि 'मैं मरा नहीं हूं जो चुपचाप यह देखता-सुनता रहूँ।' अपनी अहं तुष्टि के लिए इन्सान किसी भी हद तक जा सकता है। यहां पर गुरु जाम्भोजी अहं को मारने की बात कहते हैं–

'जीवत मरो रे जीवत मरो जिन जीवन की विध वाणी'

यहां शरीर की मौत की बात नहीं है, जो जीवन जीने की विधि को जान लेता है, वही ऐसी मौत मरता है।

'जाकै बहुती नवणी, बहुती खिंवणी, बहुती क्रिया समाणी
जाकी तो निज निर्मल काया, जोय-जोय देखो लेयदियो
असमाणी– (98)'

जो अत्यन्त विनम्र है, अत्यन्त क्षमाशील है और प्रत्येक परिस्थिति में समभाव से रहता है, वही मोक्षलाभ प्राप्त करता है।' यहां यह भ्रम ना रहे कि यहाँ कायरता की झलक मिलती है क्योंकि अहिंसक आदमी से बड़ा कोई शूरवीर हो ही नहीं सकता, कायरों के झुण्ड में अहिंसा जीवित नहीं रह सकती। परहित के लिए गुरु जाम्भोजी तुरंत प्राण अर्पण के लिए भी कहते है– **'खेत मुक्त ले किसना अर्थे, जे कंध हरे तो हरियो'**– (सबद 34)

अतृप्ति की कुण्ठा से हिंसक भाव पैदा होता है, इसलिए श्री गुरु जाम्भोजी ने मनुष्य को संयमी, संतोषी, सदाचारी बनने और दुनियां के गाजे-बाजों की चकाचौंध में न पड़कर सादगी से भरा जीवन जीने के लिये कहते हैं और ऐसे व्यक्ति के लिये स्वयं के द्वारा हिंसा करना तो दूर रहा, वह जिस क्षेत्र से गुजरेगा वहां भी हिंसा के कीटाणु खत्म हो जाएंगे।

अहिंसा प्रिय बिश्नोई समाज का निर्माण श्री गुरु जाम्भोजी की विश्व को बहुत बड़ी देन है। जब किसी बिश्नोई का जिक्र आता है तो यह निश्चय समझा जाता है कि वह जीव हिंसा और मांस भक्षण नहीं करेगा तथा आखिरी दम तक वृक्षों और वन्य जीवों का रक्षण करेगा, यह समाज की एक बड़ी उपलब्धि है। यह कहने में भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि – 'जहां सच्चा बिश्नोई है, वहीं अहिंसा है और वहीं ईश्वर है।''

अहिंसार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम्।
यःस्याद हिंसा सम्पृक्तः स धर्म इति निश्चयः॥ (महाभारत)

'जो अहिंसा से युक्त है, वही धर्म है, ऐसा धर्मात्माओं का निश्चय है।' ऐसे अद्वितीय अहिंसा से युक्त बिश्नोई समाज में जन्म पाना निश्चय ही परम सौभाग्य का कारण है।

–विनोद जम्भदास कड़वासरा
हिम्मतपुरा, तह. अबोहर-152116
जिला फाजिल्का

भक्ति आन्दोलन में गुरु जाम्भोजी का योगदान

भारत के इतिहास के मध्यकालीन युग में भक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण आन्दोलन था जो युगों तक चला था और उसने एक नई मिसाल पैदा की थी। यह एक ऐसा आन्दोलन था जिसमें क्षेत्र, जाति-भेद, धर्म, पंथ और वर्ग के सभी बन्धन टूट गये थे और समस्त राष्ट्र में एक ऐसी लहर आई थी जिसमें पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण के सभी संत और भक्त कविगण एक जुट हो गये थे और उन्होंने मिलकर ऐसे भक्ति काव्य का सृजन किया था जिससे जनमानस के दु:खी हृदय को शान्ति मिली थी और उनके जीवन में नवीनता आई थी तथा उसके मन में एक नया विश्वास जगा था जिससे वह सम्मानपूर्वक जी सके। भक्ति भारतीय मानव के मन में सदा ही विराजमान रही है।

भक्ति आन्दोलन मध्यकालीन युग से पहले भी हुये हैं मगर ऐसा आन्दोलन कभी नहीं हुआ जैसा मध्यकालीन युग में हुआ था। भक्ति आन्दोलन के उद्भव और विकास के बारे में संतों, भक्तों, कवियों और विद्वानों ने विस्तार से विचार विमर्श किया है। आपस में मतभेद भी हैं। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन को केन्द्रित करने और आलोचना के केन्द्र में लाने तथा इसको महत्व देने का कार्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा किया गया।

भक्ति आन्दोलन व साहित्य के विषय में काफी शोध कार्य भी हुये हैं, इनके आधार पर हम कह सकते हैं कि भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ दक्षिण भारत में आलवार भक्तों द्वारा हुआ फिर यह आन्दोलन नाथमुनि, यमुनाचार्य, रामानुजाचार्य, मध्यवाचार्य, रामानन्द, वल्लभाचार्य, गुरु जाम्भोजी, गुरु नानक देव जी, संत कबीर जी, विष्णु स्वामी आदि महापुरुषों द्वारा विकसित हुआ। वैष्णव और शैव हाथों में भी कुछ समय तक रहा।

उत्तर में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा की गई विवादित प्रतिक्रिया इस तरह से है कि 'भारत देश में मुस्लमानी राज्य स्थापित होने के बाद हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिये अवकाश न रह गया था क्योंकि उनके सामने ही उनके मन्दिर गिराये जाते थे और मूर्तियाँ तोड़ी जाती थी। महापुरुषों का अपमान किया जाता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। परस्पर लड़ने वाले राज्य भी समाप्त हो गये थे। ऐसी अवस्था में भगवान की करुणा व शरण के लिये प्रार्थना करने के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं था। अन्य भक्त कवियों ने भी इसका समर्थन किया है पर सर्वप्रथम आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसकी कड़ी आलोचना करते हुये कहा है कि यह बात हास्यास्पद है कि जब मुस्लिम उत्तर में मन्दिरों को तोड़ रहे थे उसी समय दक्षिण में भक्त कवियों ने भगवान की शरण के लिये प्रार्थना की थी। मुस्लमानों के अत्याचार के कारण यदि भक्ति भावना उमड़नी ही थी तो उसे पहले सिंध में फिर उत्तर भारत में उमड़नी चाहिये थी मगर वह दक्षिण भारत में उमड़ी।

इसके बारे में डॉ. राजमल बोरा का मत है कि जो विद्वान भक्ति को आन्दोलन के रूप में स्वीकार करते हैं और आन्दोलन को इस्लामी संस्कृति की प्रतिक्रिया का मुख्य कारण बतलाते हैं उन्हें इस विषय पर गहन चिन्तन करना होगा कि जब भक्ति का प्रारम्भ हुआ था उस समय इस्लामी संस्कृति इस देश में आई ही नहीं थी। अन्य अनेक विद्वानों ने भक्ति आन्दोलन के उदय और विकास में किसी प्रकार भी इस्लामी हस्तक्षेप स्वीकार ही नहीं किया।

भक्ति आन्दोलन एक धार्मिक आन्दोलन के रूप में नहीं उमड़ा बल्कि एक सांस्कृतिक आन्दोलन के रूप में उमड़ा। इस आंदोलन की महत्वपूर्ण उपलब्धि

यह थी कि इस आन्दोलन ने भारतीय भाषाओं को एक नया जीवन प्रदान किया था- कन्नड, तमिल, तेलुगु, मलयालम, मराठी, गुजराती, बंगला, असमी, सिंधी, पंजाबी और हिन्दी इन सभी भाषाओं में व्याप्त है। ये सभी भाषाएँ अपने प्रारम्भिक काल से इससे जुड़ी हुई थी। भक्ति आन्दोलन, सभी भाषाओं, जात-पात, धर्म, वर्ग व सम्प्रदाय की सभी प्रथाओं को तोड़ कर सारे भारत में फैल गया था, इसका विशेष कारण यह है कि इसने आधुनिक युग की भाषाओं को अपनाया था। मध्यकालीन युग में यदि सांस्कृतिक परम्पराओं की किसी ने रक्षा की थी तो वह केवल भक्ति काव्य ही है।

मध्यकालीन भक्त कवि केवल उपासना करने वाले कवियों में से नहीं थे अपितु वे एक महान क्रांतिकारी चिंतक थे। डर, लोभ उनसे दूर था। इन्होंने अपने क्षेत्र में भक्ति आन्दोलन को गति प्रदान करने के साथ-साथ जन आन्दोलन भी बनाया था। भक्ति काव्य में निर्गुण और सगुण कवियों ने जात-पात, धर्म और देश की सभी सीमाओं को एक तरफ रखकर जो कल्याणकारी उपदेश दिये थे वे भारतीय काव्य और विश्व काव्य में महत्वपूर्ण और उपयोगी हैं। भक्ति काव्य किसी एक क्षेत्र में सीमित नहीं है बल्कि समस्त भारतीय जीवन धारा का प्रतिनिधि काव्य है।

भक्ति आन्दोलन और साहित्य का यदि अवलोकन करें तो स्पष्ट रूप से विदित हो जाएगा कि इस आन्दोलन की शक्ति और प्रगति का कारण छोटी-2 भक्ति काव्यधाराएँ ही थी जो अपने-अपने क्षेत्र और भाषाओं में स्वतंत्र रूप से बह रही थी और भक्ति आन्दोलन का एक अटूट अंग बन गई थी। भक्तिकाव्य की इन विभिन्न काव्यधाराओं में जाम्भाणी काव्यधारा अपना विशेष और महत्वपूर्ण स्थान रखती है और अपनी विशेषताओं एवं उपलब्धियों के कारण महत्वपूर्ण हक की हकदार भी है।

सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जोधपुर, राजस्थान में इस सर्व शक्तिमान भक्ति आन्दोलन के उत्थान के लिये तथा तीव्र गति प्रदान करने के लिये तथा निराश जनता को सहारा देने के लिये एवं भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिये और प्रह्लाद पंथ के 12 करोड़ जीवों का उद्धार करने के लिये जाम्भोजी ने विक्रमी सम्वत् 1508, भादो बदी अष्टमी, सन् 1451 में जोधपुर राज्यान्तर्गत पीपासर ग्राम में, जो नागौर से 16 कोस उत्तर को है, परमार गौत्र में ठाकुर लोहट जी के यहाँ अवतार लिया था, उन्होंने अपने महान और प्रभावशाली व्यक्तित्व और कल्याणकारी बिश्नोई पंथ और वेद युक्त वाणी द्वारा भक्ति आन्दोलन व भक्ति साहित्य को एक नवीन गति और शक्ति प्रदान की थी। गुरु जाम्भोजी ने सभी वर्गों के लोगों को दीक्षा देकर बिश्नोई पंथ की स्थापना की थी। उनकी जातियाँ तो समाप्त हो गई थी मगर गौत्र उसी प्रकार रहे थे।

गुरु जाम्भोजी ने तीन बार विश्व भ्रमण करके बिश्नोई पंथ का प्रचार और प्रसार किया था। उनका प्रचार केवल राजस्थान तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने घूम-घूम कर पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड (पहले उत्तर प्रदेश का अंग था), मध्यप्रदेश, मध्यभारत, महाराष्ट्र, मद्रास, बंगाल, बिहार, गुजरात के अतिरिक्त विदेशों में काबुल, कंधार, अरब, ईरान, अफगानिस्तान, मक्का, मदीना, लंका, नेपाल और अमेरिका आदि देशों में भी प्रचार किया था। जाम्भोजी ने 7 वर्ष तक बाल लीला की। 27 वर्षों तक गायों की रक्षा हेतु कृष्ण मुरारी की भाँति गायें चराई थी और 51 वर्ष तक मोक्ष, मुक्ति, पर्यावरण संरक्षण व जीव रक्षा तथा मानवता के बारे में उपदेश दिये थे। उनके प्रवचनों की वाणी का संकलन कर 'सबदवाणी' का नाम दिया था। 'सबदवाणी' कोई साधारण वाणी नहीं है यह तो कैवल्य अर्थात् सर्वज्ञ वाणी है जिसमें लोक परलोक से सम्बन्धित असंख्य व्यावहारिक तथा दार्शनिक सूक्तियाँ छिपी हैं।

गुरु जाम्भोजी सत्य और अहिंसा के सच्चे पुजारी थे। जाम्भाणी साहित्य सत्य और अहिंसा तथा सद्‌गुणों

से भरपूर है। यह वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर आधारित है। बिश्नोई पंथ के 29 नियमों में सत्य और अहिंसा, क्षमा, दया, करुणा और सहनशीलता कूट-कूट कर भरी है, इसलिये इसको पंचम वेद भी कहते हैं, गुरु जी ने सार्वजनिक घोषणा की -

'मोरा उपख्यान वेदूं कण तत भेदूं शास्त्रे पुस्तकें लिखणा न जाई। मेरा शब्द खोजो ज्यूं शब्दे शब्द समाई'

यह प्राचीन हिन्दी साहित्य की मूल्यवान निधि हैं। गुरु जाम्भोजी ने मूर्ति पूजा का खण्डन किया है तथा कुरीतियों तथा आडंबर आदि पर घोर प्रहार किया है।

जाम्भाणी साहित्य की रचना गुरु जाम्भोजी की मौजूदगी में ही प्रारम्भ हो गई थी। उनके शिष्यों में तेजो जी, कान्हा जी, आलम जी, अल्लू जी, उदो जी, कुल चन्द्र जी, रामलाल जी, रायचन्द जी, केसो जी, पद्म भक्त आदि ने उच्चकोटि के साहित्य का सृजन किया है। उनके मुख्य शिष्यों में संत वील्होजी थे, जिन्होंने बिश्नोई पंथ के साथ-साथ जाम्भाणी साहित्य को भी सुव्यवस्थित किया है।

वील्होजी की शिष्य परम्परा में केसोजी, सुरजन जी ने जाम्भाणी साहित्य को एक नया रूप प्रदान किया है। गोकुल जी, परमानन्द जी, उदो जी 18वीं सदी में हुए हैं, ये जाम्भाणी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। जाम्भाणी काव्यधारा 20वीं शताब्दी में बिना किसी बाधाओं के बहती रही है। संत साहबराम राहड़जी ने सम्वत् 1947 में जम्भसार महाकाव्य लिखा जो भक्ति काव्य की मूल्यवान निधि है। वर्तमान युग में अनेक जाम्भाणी साहित्यकार अपनी लेखनी द्वारा जाम्भाणी साहित्य का अपना कर्त्तव्य समझकर निष्ठापूर्वक सृजन कर रहे हैं।

यह खेद का विषय है कि अनेक कारणों से जाम्भाणी साहित्य का ठीक प्रकार से प्रचार व प्रसार नहीं हो पाया। आलोचकों, इतिहासकारों और साहित्यकारों के प्रमुख व गौण के दृष्टिकोण का भी जाम्भाणी साहित्य पर असर पड़ा है और इनके द्वारा जाम्भाणी साहित्य की उपेक्षा की गई है।

जाम्भाणी साहित्य का यदि अवलोकन करे तो स्पष्ट विदित होता है कि जाम्भाणी साहित्य भक्ति साहित्य की आत्मा है, भक्ति आन्दोलन का समस्त रूप इसमें झलकता है। भक्ति आन्दोलन के समस्त कवियों ने एक होकर साहित्य का सृजन किया था, भक्ति काव्य का एक-एक शब्द ईश्वर भक्ति को अर्पित किया गया है।

निर्गुण व सगुण का अनुपम समन्वय इसकी अपनी एक विशेषता है। गुरु जाम्भोजी ने निर्गुण और सगुण का बड़े ही सुन्दर ढंग से समन्वय कर, संतवाणी अर्थात् भक्ति साहित्य का क्षेत्र और भी विस्तृत कर इसमें उत्साह भर दिया था। अत: निर्गुण भक्ति की रचनाओं के साथ-साथ लीला गान और लीला विषयक रचनाएं इस परम्परा की विशेषता है तथा राजस्थान के इतिहास में यह विशेष काव्यधारा है।

जैसा भागवत धर्म का सन्देश है कि सगुण और निर्गुण उपासनाएँ एक दूसरे की विरोधिनी नहीं है, बल्कि एक दूसरे की पूरक हैं। भक्ति साहित्य के अंतर्गत गुरु जाम्भोजी ने सम्बन्धित निर्गुण समन्वित सगुण काव्यधारा व सगुण और निर्गुण काव्यधारा का प्रवृतिगत भेद दर्शाया है। जाम्भोजी ने विष्णु को निराकार और साकार दोनो रूपों में स्वीकार किया है। उसी विष्णु को प्रलयकाल में- अलेख शब्दों द्वारा कहा गया है और सृष्टि सृजन के बाद वही विष्णु साकार रूप में पालन-पोषण करने वाले बन जाते हैं। ये दोनों रूप अपने ही बतलाते हैं। इसलिये इस परम्परा में गुरु जाम्भो जी और उनकी वाणी का महत्व स्वयं ही स्पष्ट है।

इन सभी आधारभूत कारणों और तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि गुरु जाम्भोजी का भक्ति आन्दोलन और साहित्य में विशिष्ट योगदान है।

जाम्भाणी साहित्य, भक्ति आन्दोलन व भक्ति साहित्य का एक अटूट अंग है, इसके बिना भक्ति आन्दोलन सम्पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

संदर्भ-

1. जाम्भो जी (पृष्ठ 28)- हीरालाल माहेश्वरी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
3. हिन्दी साहित्य: उद्‌भव और विकास (पृ. 55)- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।
4. बिश्नोई पंथ और साहित्य (पृ. 39)- डॉ. बनवारी लाल सहू।
5. कैवल्य ज्ञानी भगवान जम्भेश्वर जी (पृ. 29)- बलबीर सिंह बिश्नोई।
6. बिश्नोई धर्म परिचय (पृ. 6)- दिल्ली बिश्नोई सभा, दिल्ली।
7. अमर ज्योति पत्रिका दिसम्बर, 2015, सम्पादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई- बिश्नोई मन्दिर, हिसार।
8. डॉ. राजमल बोरा, भारतीय भक्ति साहित्य- पृ. 86
9. कृष्णानन्द आचार्य, पोथो ग्रंथ ज्ञान।
10. सबदवाणी दर्शन- कृष्णानन्द आचार्य पृष्ठ-222

-ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर'

प्रधान, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा, दिल्ली शाखा।

ई-मेल: opvishnoi@hotmail.com

मो.: 9891098790, फोन: 011-25262656

पाठकों से अनुरोध है कि.....

- अमर ज्योति प्रत्येक मास की पहली तारीख को भेजी जाती है। यदि 15 तारीख तक आपको न मिले तो इसकी सूचना आप 01662-225804/8059027929 पर या पत्र, ई-मेल द्वारा दें ताकि आपको दूसरी प्रति भेजी जा सके। सूचना देते समय रसीद क्रम संख्या अवश्य बताएं।
- जिनकी सदस्यता अप्रैल, 2017 में पूरी हो रही है, वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अवश्य करा लें।
- अमर ज्योति आपकी अपनी पत्रिका है, इसके प्रचार-प्रसार में सहयोग दें। अपने मित्रों, सम्बन्धियों एवं परिचितों को भी पत्रिका परिवार का सदस्य बनाएं ताकि वे भी इसके ज्ञानामृत का पान कर सकें।
- अमर जयोति बिश्नोई सभा, हिसार का समाज हितार्थ प्रकाशन है। सभा इसे महंगाई के युग में भी अत्यन्त कम मूल्य (लागत से भी कम) पर उपलब्ध करवा रही है। आप भी अपने खुशी के अवसरों (विवाह, जन्मदिन, नौकरी, पदोन्नति, व्यवसाय लाभ आदि) पर अपनी इस चहेती पत्रिका को सहयोग देना न भूलें।
- विवाह, जन्मदिन आदि अवसरों पर आप अपने प्रियजनों को अमर-ज्योति की आजीवन सदस्यता रूपी अनूठा उपहार देकर उनके हृदय में चिरस्थायी स्थाना बना सकते हैं।
- समय-समय पर अपने सुझावों व प्रतिक्रियाओं से हमारा मार्गदर्शन करते रहें।
- सदस्यता शुल्क व्यवस्थापक, अमर-ज्योति, बिश्नोई मंदिर, हिसार-125001, हरियाणा के पते पर मनीऑर्डर, चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

- सम्पादक

धर्म का स्वरूप

धर्म आचरण का विषय है। धर्म धारणा का विषय है। धार्मिक बातों के कहने या सुनने मात्र से साधना नहीं हो जाती और आज के परिवेश में जिसे धर्म कहा जा रहा है वह तो कतई धर्म नहीं है निरा पाखण्ड है। धर्म के नाम पर जो गतिविधियां हो रही है उनसे मन तो प्रसन्न हो सकता है पर आत्मज्ञान की प्राप्ति नहीं होने वाली। आत्मज्ञान मन के भ्रमण करने और प्रसन्न होने से नहीं होता उसके लिए चित्त की शान्ति और तत्व पद शोधन करना होता है अर्थात् शान्त चित्त होकर अपने भीतर में परमात्मा की खोज करनी होती है। मन को प्रसन्न करने के सारे उपक्रम सांसारिक बन्धन सुदृढ करने वाले ही होते है। जब चंचल मन को स्वतन्त्र कर दिया जाये तो वह माया के अधीन हो जायेगा जिसके कारण भीतर में राग द्वेषादि विकारों की पकड़ हो जायेगी। इस प्रकार काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह व अंहकार आदि दुर्गुण मन में पलने लगेंगे जिससे विनाश ही होगा। आत्मिक पतन ही होगा और भीतर आत्मज्ञान के अभाव में रिक्त ही रहेगा। इस प्रकार से संसार में मान सम्मान पाकर, समृद्धि पाकर पूजनीय होना सम्भव है। और इस प्रकार से मन प्रसन्न करने वाले धार्मिक उपक्रम यथा प्रवचन, नाच गान अभिनय आदि करके बहुत बड़ा धर्मवेता, धर्माचारी कहलाना भी सम्भव है और अपने अनेकानेक समर्थक और अनुयायी बनाने भी सम्भव है। पर मृत्योपरान्त इन सबकी दुर्गति ही होने वाली है। क्योंकि आत्मज्ञान के अभाव में सांसार से मुक्ति और परमात्मा से साक्षात्कार दुर्लभ है। अत: आत्मज्ञान की प्राप्ति हेतु शान्तचित्त से बारम्बार परमात्मा का ध्यान करो, भजन करो, चिन्तन करो।

सबदवाणी में सद्‌गुरुदेव जाम्भोजी ने कहा है-

ले कुंची दरबान बुलाओ। दिल ताला दिल खोवो।
जंपो रे जिण जंप्यो जणीयर जपसी सो जिण हारी।
लह लह दाव पड़न्ता खेलो। सुर तेतीसों सारी।

हे प्राणी ! धर्म की बातें सुनकर उनका मनन करो उनको धारण करो जिससे हृदय देश में ज्ञानरूपी दरबान का प्रवेश हो जायेगा और तुम्हारे मन पर जड़ित संशय रूपी ताला खुल जायेगा अर्थात् ज्ञान द्वारा समस्त संशयों की निवृति करो।

जब संशयों की निवृति हो जाये तो तुम उसी का मनन, उसी का चिन्तन, उसी की खोज करो जो जपने योग्य है। अर्थात् संशयो की निवृति कर आत्म-साक्षात्कार का प्रयास करो । सृष्टि के कारक परमात्मा की खोज अपने हृदय देश में करो। जप, ध्यान, चिन्तन परमात्मा का करो। अपने भीतर परमतत्व की खोज करो जिससे आत्म साक्षात्कार सम्भव हो जायेगा। अर्थात् बारम्बार परम तत्व का ध्यान करने, जप करने, चिन्तन करने से परम तत्व की प्राप्ति हो जायेगी और इस प्रकार देह त्यागने पर तैतीस कोटि देवों से भी उत्तम पद मोक्ष की प्राप्ति हो जायेगी।

अत: सांसारिक मान सम्मान और लोभ लालच में उलझे धर्मवेताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिए। आत्मज्ञान की प्राप्ति कर आत्म साक्षात्कार के निरन्तर प्रयास करने चाहिए। यही सत्य धर्म है। यही सही धर्म क्रिया है।

आज चारों ओर बड़े बड़े आयोजन हो रहे हैं जहां धार्मिक प्रवचन सुनने को मिल रहे। आधुनिक संचार के मध्यमों से इनका प्रसार अन्नत गुणा हो गया है।

प्रवचनकारों में लाईव टेलिकास्ट होने की होड़ सी लगी है। प्रवचनों, आलेखों में अपीलों में संसार को नश्वर बताकर काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और अंहकार को मानव जीवन का शत्रु बताया जाता है। भावनापूर्ण बातें कर लोगों को सम्मोहित किया जा रहा है। यहां साधारण श्रोताओं और पाठकों से अधिक तो ये विकार प्रवचनकार, आयोजक और विद्वान कहे जाने वाले महानुभावों में भरे हुए। वे चिल्ला चिल्लाकर दूसरों को इन विकारों को त्यागने व इनसे सावधान होने के चेतावनी देते रहते है पर स्वयं इनके भंवर में बुरी तरह से फंसे हुए है। वे इन शत्रुओं को अपने भीतर होते हुए भी छुपाने का प्रयास करते है। वे चलते फिरते उठते बैठते बोलते व्यवहार करते हुए भी भीतर से मूर्छित है । निंद्रा में है। इनकी दशा ठीक वैसी ही है जैसे गहरे जल में डूब रहा व्यक्ति स्वयं को डूबने से बचने का प्रयास ही नहीं करता हो तथा स्वयं के सुरक्षित होने का अभिनय करते हुए अन्यों को डूबने से बचने की सीख दे रहा हो। यह एक ऐसी अवस्था है जब जानते हुए भी अनजान बनकर नुकसान उठाया जाये। जागते हुए भी नींद में रहने जैसा है।

सबदवाणी में सदगुरुदेव जाम्भोजी ने कहा है कि–

जुग जागो जुग जाग पिराणी कांय जागंता सोवो।
भलके बीर बिगोवो होयसी। दुसमन कांय लकोवो।

हे प्राणी ! जगत में रहते हुए जागृत रहो और जगत में दूसरों को जागृत करने का उपदेश देने वाले तुम स्वयं भी जाग जाओ। तुम सब जागने की बात करते हुए भी सो क्यों रहे हो। अर्थात् विकारों के दमन की बातें तो कह और सुन रहे हो परन्तु भीतर मन में विकारों को पूर्ण स्थान दे रहे हो। विकारों को पाल रहे हो। अरे ! यह भला समय, शुभ अवसर चूक गये और विकारों का त्याग नहीं किया तो जब अन्तिम अवसर आयेगा तो तुम्हारे निकट इस चूक के लिए पछताना ही शेष रहेगा। तुम जानते हुए भी अपने भीतर अपने जीवन के इन दुश्मन यथा काम, क्रोध, मद, लोभ और अंहकार आदि को छुपा रहे हो। यह बहुत ही घातक काम कर रहे हो। अत: उपदेश केवल कहो और पढो मत जीवन में अपनाओ तथा अपनी कमियों को छुपाओ मत उनका त्याग करो। सुधार करो।

– गोपाल बैनीवाल

जांगलू (बीकानेर) मो.: 9414973029

लेखकों से अनुरोध है कि.....

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अमर–ज्योति का जून का अंक पर्यावरण अंक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। पर्यावरण से सम्बन्धित शोधपत्र, लेख, कविता, गीत, कहानी, स्लोगन इस अंक हेतु आमन्त्रित हैं। रचना व सुझाव भेजने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल, 2017 है। आप अपनी रचना AAText या Krutidev10 फोंट में टाईप करके भी भेज सकते हैं। हमारा ईमेल पता है : editor@amarjyotipatrika.com, info@amarjyotipatrika.com

नोट: लेख/रचना की अधिकतम शब्द सीमा 1500 है। **–सम्पादक**

आध्यात्मिकता में सभी समस्याओं का समाधान

क्या हम भगवान जम्भेश्वर जी द्वारा बताये गए मार्ग का अनुसरण करते हैं? क्या हम मन, वचन, कर्म द्वारा किसी को कष्ट तो नहीं पहुँचाते हैं? चिंतन करने पर इन सभी प्रश्नों का उत्तर नकारात्मक मिलता है। जिससे समाज में अशांति व अराजकता का माहौल बन रहा है। इन सब समस्याओं का समाधान आध्यात्मिकता में है। आध्यात्मिकता से मनुष्य का आचरण सुधरता है और आचरण अच्छा होने से ही इन सभी समस्याओं का समाधान होगा।

आत्मा के मनन-चिंतन और अध्ययन को ही अध्यात्म कहते हैं और अंग्रेजी में इसे (Spirituality) स्प्रिचुअलिटी कहते हैं। जिसका अर्थ आत्मा के मूल गुणों को जानना, उन मूल गुणों का अपने जीवन में व्यवहार करना और परमात्मा से बुद्धियोग जोड़कर मूल गुणों को बढ़ाना आध्यात्मिकता के सूत्र नारों के रूप में, उपदेश में, प्रवचन में व लिखित में तो बहुत है परन्तु इन सब को व्यवहार में उतारने की जरूरत है।

अध्यात्मिकता के लिए आम जन में यही भावना है कि बुढ़ापे में अध्यात्मिकता अपनाएंगे, परन्तु यह धारणा बिल्कुल गलत है। अध्यात्मिकता को युवा अवस्था से ही अपनाने की जरूरत है। अध्यात्मिक ज्ञान होगा तो युवा अवस्था से ही व्यक्ति का आचरण सुधर जाएगा और वह अपने जीवन में कोई गलत कार्य नहीं करेगा। आध्यात्मिकता हमें पूरे विश्व के लोगों के भले के बारे में सिखाती है। उदाहरण स्वरूप- "मान लो एक आटे का व्यापारी है, उसके घर में छः सदस्य हैं। व्यापारी आटे में मिलावट करता है और वह आटा गाँव के 6000 लोग प्रयोग करते हैं। वह अपने छः लोगों का पेट पालने के लिए 6000 लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करता है फिर कहता है मेरे लिए पहले मेरा परिवार है बाकी सारी बातें बाद में। यह व्यापार का क्षेत्र 6000 की बजाय 6 लाख व 6 करोड़ भी हो सकता है। बात केवल आटे की नहीं, दवा, मिठाई, कपड़ा व अन्य जीवनपयोगी समान सभी में, आज मिलावट ही मिलावट नजर आती है। काश इन जीवनपयोगी वस्तुएँ बनाने वाले व्यापारियों को आध्यात्मिकता का ज्ञान होता तो वे अपने परिवार को पालने के लिए करोड़ों लोगों की जिन्दगी से खिलवाड़ नहीं करते।

ऐसे ही नौकरी पेशा को ले लीजिए। हर क्षेत्र भ्रष्टाचार में लिप्त है। उपदेश तो सबके सुने हैं जैसे गरीब और अमीर को समदृष्टि से देखना, महिलाओं का सम्मान करना, अनपढ़, गरीबों की मदद करना, कर्तव्य निष्पक्ष भाव से पूरा करना। विचार कीजिए क्या किसी दफ्तर में इन उपदेशों को कोई अधिकारी मानता है। हर अधिकारी भ्रष्टाचार से पैसा कमाने में लगा है। ईमानदारी शब्द को भूल गए हैं। आध्यात्मिकता के ज्ञान से ईमानदारी, नि:स्वार्थभाव, समदृष्टि, निष्पक्ष भाव को जागृत किया जा सकता है जो कि युवा अवस्था में सीखेंगे तभी अपने आचरणों में लाकर मनुष्य-जन का कल्याण कर पाएंगे।

-प्रो. चंद्रकला

155, सैक्टर 15ए, हिसार

आओ हम अपने को समझें ?

यह संसार क्या है एक सनातन वृक्ष! इस वृक्ष का आश्रय है एक प्रकृति। इसके दो फल हैं– सुख और दु:ख। इसकी तीन जड़े हैं– सत्व, रज और तम:। चार रस हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसको पहचानने के पाँच प्रकार हैं– श्रोत, त्वचा, नेत्र, रसना और नासिका। इसके छ: स्वभाव हैं– पैदा होना, रहना, बढ़ना, बदलना, घटना और नष्ट हो जाना। इस वृक्ष की छाल है सात धातुएँ– रस, रूधिर, मास, भेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र। आठ शाखाएँ हैं– पाँच महाभुज, मन, बुद्धि और अंहकार। इसमें मुख आदि नौ द्वार हैं– प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान नाग, कर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय ये दस प्राण ही इसके दस पत्ते हैं। इस संसार रूपी वृक्ष पर दो पक्षी हैं– जीव और ईश्वर।

इस संसार रूपी वृक्ष की उत्पत्ति का आधार एक मात्र श्री हरि विष्णु आप ही हैं। आपमें ही इसका प्रलय होता है और आपके ही अनुग्रह से इसकी रक्षा होती है। जिनका चित्त आपकी माया से आवृत्त हो रहा है, वह इस सत्य को समझने की शक्ति खो बैठा है वे ही उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने वाले ब्रह्मादि देवताओं को देखते हैं। तत्व ज्ञानी पुरुष तो सबके रूप में केवल आपका ही दर्शन करते हैं।

आप ज्ञानस्वरूप आत्मा हैं। चराचर जगत के कल्याण के लिए ही अनेको रूप धारण करते हैं। जैसे गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि–

"यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम्॥"

जब-जब आवश्यकता पड़ती है, तब-तब श्रीहरि आप अवतार लेते हैं। एक युग में भी जितनी बार आवश्यकता और अवसर प्राप्त हो, उतनी बार अवतार ले सकते हैं, जैसे समुद्र मंथन किया, कच्छप रूप में मंदराचल को धारण किया तथा सहस्रबाहु रूप से मंदराचल को ऊपर से दबाकर रखा। फिर देवताओं को अमृत बाँटने के लिए मोहिनी रूप धारण किया। अधर्म की वृद्धि और धर्म का ह्रास होने का मुख्य कारण है नाशवान पदार्थों की ओर आकर्षण।

जैसे माता और पिता से शरीर बनता है। ऐसे ही प्रकृति और परमात्मा से सृष्टि बनती हैं। इसमें प्रकृति और उसका कार्य संसार तो प्रतिक्षण बदलता रहता है, कभी क्षणमात्र भी एक रूप नहीं रहता और परमात्मा तथा उनका अंश जीवात्मा दोनों सम्पूर्ण देश काल आदि में नित्य निरन्तर रहते हैं। इसमें कभी भी किंचिनमात्र भी परिवर्तन नहीं होता।

सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग इन चारों युगों की ओर देखा जाय तो इसमें भी धर्म का हास होता है। सतयुग में धर्म के चार चरण होते हैं, त्रेता युग में तीन, द्वापर युग में दो और कलियुग में धर्म का केवल एक चरण शेष रहता है। जब युग की मर्यादा से भी अधिक धर्म का हास हो जाता है तब भगवान धर्म की पुन: स्थापना करने के लिए अवतार लेते हैं। इसलिए हमें निरन्तर परमात्मा में अपना मन लगाना चाहिए क्योंकि श्री गुरु जम्भेश्वर महाराज ने भी सबदवाणी में कहा है कि "करषण करो सनेही खेती, तिसियां साख निपाइयें" अर्थात् यह जीवन हरी खेती की तरह फलदाई है। जिस प्रकार किसान कम वर्षा होने पर भी परिश्रम से अनाज पका लेता है, उसी प्रकार यह शरीर ही खेत है यह जीवात्मा ही किसान है। इसलिए आओ हम सभी श्रीहरि विष्णु भगवान के श्री चरणों में अपने आपको समर्पित कर दें ताकि हमारा इहलोक और परलोक सुधर सके।

– संदीप गोदारा

कालवास (हिसार) मो. 9466371529

अहिंसा परमो धर्मः

मनुष्यता का लक्षण धर्म है और धर्म के मूल में दया निहित है। जिस मनुष्य के हृदय में दया नहीं, वह मनुष्यता से पूर्ण लक्षणों से युक्त नहीं कहा जा सकता है। यह दया मनुष्य की वह करूण भावना ही मानी जायेगी जो संसार के प्रत्येक प्राणी के लिए बराबर हो, करूणा, दया, क्षमा, संवदेना, सहानुभूति तथा सौहार्द्र आदि गुण एक दया के ही अनेक रूप अथवा उसकी ही शाखा-प्रशाखाएं हैं। जब तक जिसमें इन गुणों का अभाव है, मनुष्य योनि से उत्पन्न होने पर भी उसे मनुष्य नहीं कहा जा सकता है।

माँस भोजन मानवता की स्थापना एवं स्थिरता में बहुत बड़ा बाधक है। आन्तरिक उन्नति के लिए मनुष्य के तन-मन और बुद्धि निर्विकार होने चाहिए। मनुष्य के इन तीनों साधकों का निर्माण उस अन्न, उस भोजन से होता है जो मनुष्य खाता है। मांस तमोगुण प्रधान भोजन है।

सतपुरुषों ने सदा ही इस कुकर्म से लोगों को हटाने का प्रयत्न किया है। इस बात पर जोर दिया गया है कि लोग इस अनीति से दूर हटे, सभी मजहबों के धर्म ग्रंथों ने एक स्वर से मांसाहार का निषेध किया है और इस बुराई पर अड़े हुए लोगों को कटु शब्दों से धिक्कारा है। बिश्नोई धर्म में तो पग-पग पर अहिंसा का प्रतिपादन है पर अन्य धर्म जो हिंसा व मांसाहार में विश्वास करते हैं उनके धर्म ग्रंथों ने भी दुष्प्रवृत्तियों के विरूद्ध बहुत कुछ कहा है।

सबदवाणी के आठवें शब्द में गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि- "**सूल चुभीजे करक दुहेली, तो हे हे जायो जीव न घाई।**"

बाइबिल में एक स्थान पर आया है- "ऐ देखने वाले, देखता क्यों है? काटे जाने वाले जानवरों के लिए अपनी जुबान खोल।" इस मंत्र का उद्देश्य यह है कि भले आदमी पशु-हत्या को चुपचाप सहन न कर, वरन इन निरीह प्राणियों को कष्ट मिटाने के लिए मांसाहार के विरुद्ध आंदोलन कर। महात्मा ईसा ने स्पष्ट कहा है कि- "तू किसी को मत मार। तू मेरे समीप मनुष्य बनकर रह। प्राणियों की हत्या मत कर। उनका मांस मत खा।"

कुरान में लिखा है कि- "हरा पेड़ काटने वाले, मनुष्यों की खरीद-फरोख्त करने वाले, जानवरों को मारने वाले को खुदा माफ नहीं कर सकता। खुदा भी उसी पर दया करता है जो उसके बनाये जानवरों पर दया दिखाता है।"

मनु भगवान ने मांसाहार का समर्थन करने वाले तक को हत्यारा कहकर पुकारा है- "अनुमन्ता विश्सिता निहन्ता क्रय विक्रयी। संस्कर्त्ता चोहपर्ता च खादकश्चेति घातका॥" अर्थात् मांसाहार का समर्थन करने वाला, मांस भक्षण की अनुमति देने वाला, मांस खरीदने या बेचने वाला, पकाने वाला और खाने वाला यह सभी हत्यारे कसाई हैं।

महाभारत में कहा है कि- "मांस खरीदने वाला धन से पशु हत्या करता है, खाने वाला स्वाद द्वारा हत्या करता है, मांस बेचने वाला चाकू से हत्या करता है। ये सभी हत्यारे हैं। जो दूसरों का मांस खाकर अपना मांस बढ़ाना चाहते हैं, उससे नीच और कौन होगा।"

सभी मजहब और धर्मों में मांसाहार निषेध है व जीवों पर दया पर बल दिया गया है, तो फिर मनुष्य मांस क्यों खाता है? यह प्रश्न हर किसी के जहन में उठता है। कुछ लोग कहते हैं कि मांस खाने से स्वास्थ्य अच्छा बनता है या ताकत आती है। यह केवल एक झूठा विश्वास है। कई वैज्ञानिक परीक्षणों में इसे सर्वथा असत्य साबित किया है और बताया है कि मांस खाने से ताकत बढ़ना तो दूर उल्टा अनेक प्रकार के रोगों में

वृद्धि होती है।

डॉ. हेग ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है। शाकाहार से शक्ति उत्पन्न होती है और मांसाहार से उत्तेजना बढ़ती है। परिश्रम के अवसर पर मांसाहारी थक जाता है। मांस भी शराब, अफीम, चरस की भांति उत्तेजक पदार्थ है। यदि वे न मिले तो सिर-दर्द, उदासी, स्नायु दुर्बलता आदि का शिकार हो जाता है। ऐसे लोग ही बहुधा निराशाग्रस्त होकर आत्महत्या करते हैं। "इंग्लैण्ड में इसका प्रचार अधिक होने के कारण शाकाहारी देशों की अपेक्षा वहां आत्महत्या ज्यादा होती है। भारत के बड़े शहरों में इस कारण युवाओं द्वारा आत्महत्या करना आम बात है।

कुछ बुद्धिमान व समझदार तर्क देते हैं कि मांस खाने से बीमारी होती है तो जंगल का राजा शेर बीमारी का शिकार होकर मर क्यों नहीं गया होता, तो इस पर वैज्ञानिकों ने बताया है कि शेर की शारीरिक संरचना ही मांसाहारियों की तरह है व शेर का मुख्य भोजन मांस ही है तथा बात रही ताकत की तो जंगल में रहने वाला शाकाहारी जीव गुरिल्ला एक थप्पड़ से शेर को मार सकता है और यदि शेर को बैल की जगह हल में जोत दिया जाये तो वह दस कदम भी नहीं चल पायेगा। जो शक्ति या ताकत शाकाहार से मिलती है वो मांसाहार से कभी नहीं मिल सकती है, यह बात पूर्णत: सत्य है।

-ओमप्रकाश कड़वासरा
राणासर कलां (धोरीमन्ना)
जिला बाड़मेर
मो. 7791975029

मुश्किल नहीं गिर कर उठना

हारना बिल्कुल भी बुरा नहीं है। भला ऐसे कैसे हो सकता है। हारना हमारी कमियों की निशानी है, हार हमें दूसरों की नजरों में गिरा देता है। हमारा आत्मविश्वास कमजोर कर देती है। जिन्दगी में जो भी बुरा हो रहा है, सब इस हार की वजह ही है। जीवन में कई ऐसे मौके आते हैं जब हम खुद यह बात कहते हैं कि हारना बुरा नहीं है। क्या हुआ आप हार गये तो? कम से कम आपने प्रयास तो किया है। यह प्रयास ही आपकी सफलता है।

हार आपकी पहचान नहीं है

किसी असफलता के बाद तुरंत से खुद पर विश्वास करना मुश्किल है। याद रखें हार आपको परिभाषित नहीं कर सकती। आपका अतीत इस वजह से नहीं और आपका भविष्य इस हार पर नहीं टिका है। आप एक इंसान हैं न कि हार। आप इस हार से कहीं ज्यादा अहम हैं। ऐसे में यह खुशी की बात है कि आपने काम को टालने की बजाय इसे करने का विकल्प चुना है।

हार से ही है जीत की पहचान

किसी ने कहा है कि असफलता बुरी है? हाँ हर कोई यही कहता है। हमें गलत के बारे में पहले सिखाया जाता है, उसके बाद सही के बारे में बताया जाता है। जीत को रोशनी से जोड़ा जाता है, हार को अंधेरे के साथ। सफलता की शुरूआत हार से होती है। हर सफल आदमी जानता है कि हारना अच्छा है क्योंकि हार ही आगे सफलता का द्वार खोलती है।

-सन्दीप ज्याणी
गांव सारंगपुर (हिसार)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ बधाई सन्देश ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

आदित्य गोदारा सुपुत्र श्री राजेन्द्र गोदारा निवासी 758, सैक्टर 15, हिसार ने MNIT, जयपुर से B.Tech करने के बाद Cleveland State University, Ohio, USA से केमीकल इंजीनियरिंग में एम. एससी. की उपाधि प्राप्त की है।

प्रेम कुमार सुपुत्र श्री हनुमान सिंह सिहाग निवासी गांव कालीरावण, जिला हिसार ने Youth Talent Search Federation of India द्वारा 19 वर्ष आयु वर्ग में 2016-17 की राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।

डॉ. अरमान सिंह बिश्नोई सुपुत्र श्री भूप सिंह बिश्नोई (HCS Retd.), निवासी 406-ए, सैक्टर 15, पंचकूला (हरियाणा) को 26 जनवरी, 2017 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर चंडीगढ़ प्रशासन द्वारा उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए राजकीय अवार्ड से सम्मानित किया गया है। आपने PEC University of Technology से सिविल इंजीनियरिंग में पीएच.डी. की उपाधि भी प्राप्त की है।

नवीन कुमार सुपुत्र श्री रामकुमार बिश्नोई (जैड.एम.ई.ओ.), निवासी 143, अग्रवाल कॉलोनी, मेन रोड, फतेहाबाद का चयन केन्द्रीय सीमा शुल्क विभाग में प्रीवेन्टिव अधिकारी के पद पर हुआ है।

विकास ज्याणी सुपुत्र श्री बंसीलाल ज्याणी निवासी गांव पिरथला, तहसील टोहाना, जिला फतेहाबाद ने 12वीं की परीक्षा 91 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीण की है।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

विज्ञापन सूचना

समाज सेवी उद्यमी एवं व्यवसायी बन्धुओं के लिए हर्ष की बात है कि अब आपकी चहेती पत्रिका 'अमर ज्योति' में प्रत्येक माह दो पृष्ठ (कवर पृष्ठ संख्या तीन व चार) विज्ञापन के प्रकाशित हो रहे हैं। इन पृष्ठों पर विज्ञापन की दर इस प्रकार रहेगी -

कवर पृष्ठ संख्या तीन	
पूरा पृष्ठ	रु. 10,000
आधा पृष्ठ	रु. 6000
एक चौथाई	रु. 3500

कवर पृष्ठ संख्या चार	
पूरा पृष्ठ	रु. 15,000
आधा पृष्ठ	रु. 10,000
एक चौथाई	रु. 6000

विज्ञापन देने के लिए अमर ज्योति कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र - 01662-225804, 8059027929 | ई-मेल : editor@amarjyotipatrika.com

जांभाणी हरजस

आलमजी कृत हरजस (राग खंभावची)

हरि लियो अवतार, आयौ घर रे पुंवार कै।
धन्य लोहट रो भाग, जां घरि किसन पधारिया ॥1॥
धन्य तिथ धन्य ओ वार, हांसल माता लोहट पिता।
रीष बाभण ब्रह्मचार, जोति गवावै जोयसी ॥2॥
चड़ि खडिया इलकार, साधु सुरगां सांमाहा।
हुई पधारि पधारि, आंगण्य आयो आप रै ॥3॥
सुंदरि सझ सिणगार, सुरगण्य आवै सामही।
सब ऐकण्य उण्यहारि, प्रीतम वचन पठाणिये ॥4॥
आलम अे उपगार, गुरवै देए हुवा हुवै ॥5॥

1. जाम्भोजी महाराज अवतार लेकर पंवार के घर आये हैं। लोहट जी पंवार के भाग्य को धन्य है, जिनके घर स्वयं कृष्ण आये हैं।
2. वह दिन और समय धन्य है, हांसा माता और लोहट पिता धन्य है। ऋषि, ब्राह्मण, ब्रह्मचारी और ज्योतिषी भी धन्य हैं।
3. साधुजनों का उद्धार करने के लिए, जाम्भोजी महाराज स्वर्ग से इस पृथ्वी पर आये हैं, उनके आने पर सब संतजन पधारो-पधारो कह करके उनका स्वागत करते हैं।
4. सुन्दरियां श्रृंगार करके उनके सामने स्वर्ग की ओर से आ रही हैं। सब एक जैसी हैं और अपने स्वामी का नाम ले रही हैं।
5. आलम जी कहते हैं कि ऐसे शुभ कार्य गुरु महाराज के आने से हुए हैं।

आलमजी कृत हरजस (राग धनांसी)

हूं तोकूं बरजि रहयौ मन मेरा ॥1॥टेक॥
जां जां दोष लगत है तोकूं, तां तां टेकत पैरा।
इकीस लाख नूषत है तोकूं, घात रहया घण घेरा ॥2॥
मैं बरजत हूं नरजत नाहीं, चाहै चरण मुकेरा।
रज रज का जब लेखा मांगै, उत्तर करत कसेरा ॥3॥
स्वाति की बूंद पियां सुख उपजै, दुःख सुख होत नवेरा।
उरि डरि होय मगन होय नाचै, गिगन किया डेरा ॥4॥
आलम के मन गुण गाय गोविंद कूं, चांदणै थकै अंधेरा ॥5॥

1. हे मेरे मन, मैं तुझे रोक रहा हूं।
2. जहां-जहां दुष्कर्म है, वहां-वहां तू जाता है। परन्तु वहां इक्कीस लाख तुझको देखते हैं लेकिन तू यहां मौज कर रहा है।
3. मैं तुझे रोकता हूं फिर भी तू मानता नहीं है। जब परमात्मा के चरणों में जायेगा, जब वे कण-कण का हिसाब मांगेंगे, तब उन्हें तू क्या जवाब देगा।
4. तुम यहां मोह में मस्त होकर नाचते हो और तुझे दु:ख-सुख का पता नहीं। शून्य में जाकर भगवान के समक्ष होने से सुख होगा, जैसे स्वाति की बूंद पीने से पपीहे की प्यास बुझती है।
5. आलम जी कहते हैं- हे मन, तुम गोविन्द के गुणों का गान करो। प्रकाश होते हुए भी तुम अंधेरे में क्यों जाते हो।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

लोक साहित्य

बिश्नोई लोकगीत

बिनायक के गीत

अळळ–अळळ म्हारी नदी रे बहवै, म्हारी नदी रे बहवै।
बुगली मळ–मळ नहावै जी।
बुगलै कागद भेज्यो रायजादा–भेज्यो रायजादा।
गैर भगत मत नहावो जी।
गैर भगत रा सीयां रे मरोला–सीयां रे मरोला।
दोपारे रा भल नहावो जी।
दोपारे री धूप पड़ै सै–धूप पड़ै सै।
सांझ पड़ै भल नहावो जी।
के रे चुगै म्हारी रतन कचोळी–रतन कचोळी ?
के रे चुगै म्हारो हारो जी ?
लाल चुगै म्हारी रतन कचोळी–रतन कचोळी।
मोतीड़ा चुगै म्हारो हारो जी।
के रे पीवैं म्हारी रतन कचोळी–रतन कचोळी ?
के रे पीवै म्हारो हारो जी ?
छाछ पीवै म्हारी रतन कचोळी–रतन कचोळी।
दूध पीवै म्हारो हारो जी।
कठै रे बिराजै म्हारी रतन कचोळी–रतन कचोळी ?
कठै रे बिराजै म्हारो हारो जी ?
छाजइय बीराजै म्हारी रतन कचोळी–रतन कचोळी।
बिरण्डै बीराजै म्हारो हारो जी।
कुणा जी री रतन कचोळी–रतन कचोळी ?
कुणा जी रो मोतीड़ा रो हारो जी ?
रामू जी री रतन कचोळी–रतन कचोळी।
राजू जी रो हारो जी।
लीनी सै म्हें रतन कचोळी–रतन कचोळी।
बदलयो मोतीड़ा रो हारो जी।
आंगणीयै फिरै म्हारी रतन कचोळी–रतन कचोळी।
निरखै म्हारो मोतीड़ा रो हारो जी॥

---00---

न्हाय धोय लाडलो बैठो बाजोट, कोई आमण दुमणो।
कांई म्हारो लाडलो मांगै सिर पाग, कांई चढण घोड़लो ?
नां ई म्हारा बाप जी मांगू सिर पाग, नां ई चढण घोड़लो।
मांगू म्हारा बापजी रामू जी री धीव, बाही म्हारै चित चढ़ी॥
न्हाय धोय लाडली बैठी बाजोट, कोई आमण, दुमणि।
कांई म्हारी लाडली मांगै गलहार, कांई दोवड़ दायज्यो ?
नां ई म्हारा बाप जी मांगू गलहार, नां ई दोवड़ दायज्यो।
मांगू म्हारा बाप जी राजू जी रो सिव,
बोई म्हारै चित चढयो॥

---00---

चानणीय रो रूंख बढाय, घड़ायो बेसणो जी।
जित बेसै जित रामू जी रो सिव, कर म्हारी भुआ आरती जी।
आरतड़ो बीरा कियो न जाय, भावज कोसा बोलिया जी।
बौगणीयां बाई परै रे निवार, घड़ी दो घड़ी गो आरतो जी।
सात सहेल्यां पूछै ली ए बात, कासूं घाल्यो आरतो जी ?
घाल्या–घाल्या पदम पचास, सोपारी घाली डेढ सौ जी।
सोपारियां रा कोठा चिणाय, मौड़ घड़ायो बालळो जी॥

---00---

साभार- बिश्नोई लोकगीत

लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इन्हें संजोकर रखना हमारा दायित्व है। खेद का विषय है कि आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों को भूलती जा रही है। माताओ–बहनों से अनुरोध है कि बिश्नोई समाज में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को कलमबद्ध कर 'अमर ज्योति' को भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

–सम्पादक

बाल कविताएँ

हाथी दादा

सूट पहन कर हाथी दादा
चौराहे पर आए,
रिक्शा एक इशारा कर के
वे तुरंत रूकवाए।

चला रही थी हाँफ-हाँफ कर
रिक्शा एक गिलहरी
बोले हाथी दादा मैडम
ले चल मुझे कचहरी।

तब तरेर कर आँखें वह
हाथी दादा से बोली,
लाज नहीं आती है तुमको
करते हुए ठिठोली।

अपना रिक्शा करूं कबाड़ा
तुमको यदि बैठा लूँ
जानबूझ कर क्यों साहब
मैं व्यर्थ मुसीबत पालूँ?

माफ करो गुस्ताखी मिस्टर
कोई ट्रक रूकवाओ
तब तुम उस पर बड़े ठाठ से
बैठ कचहरी जाओ।

-सिद्धि वाशिष्ठ, हिसार

मेरे जादूगर

मेरे जादूगर
जादू की इस नगरी में, आज भी जादूगर रहते हैं,
हम जो भी इच्छा करते हैं, वो पल में पूरी करते हैं।
जादू ही तो है ये कि इच्छा भी कहे बिन वो सुन ले,
हम समझे या न समझे उनको, पर हमें समझा वो जाते हैं।
हर मुश्किल की घड़ी में, उनको अपने संग पाते हैं,
हमें उँगली थाम चलना सिखलाया, फिर सही राह का मार्ग बताया।
वही आत्मविश्वास के गुर सिखलाये, जीवन के नैतिक मार्ग बतलाये।
आँखों में प्रेम का असीम समंदर, वो हमारे जीवन में जादू करते हैं।
जादू की इस नगरी में, आज भी जादूगर रहते हैं,
भगवान के ही रूप हैं वो, हम उन्हें माता-पिता कहते हैं।

- शिक्षा बिश्नोई
श्रीविजयनगर

कैरियर

सेरेमिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कैरियर

पुरानी समय के कच्ची मिट्टी के बर्तनों की अगली पीढ़ी के रूप में सामने आए थे सेरेमिक बर्तन। चिकनी मिट्टी के बर्तनों पर ग्लेजिंग की परत चढ़ाने से शुरू हुई परम्परा वर्तमान में सिलिका और जिरकोनियम जैसी धातुओं के अत्याधिक उपयोग तक आ पहुँची है। सुबह की चाय की प्याली के साथ शुरू होता है सेरेमिक के साथ हमारा सफर। आज सेरेमिक वस्तुएं हमारी चाय-कॉफी की प्याली से बहुत आगे बढ़कर ऑटोमोबाइल और स्पेस से लेकर मेडिकल क्षेत्र तक में छा गई है।

गौरतलब है कि सेरेमिक उत्पादों को परिभाषित करने के अनेक तरीके हो सकते हैं, लेकिन सबसे बेहतर परिभाषा यह है कि ऐसा कोई भी उत्पाद जिसकी एक निश्चित आकृति हो, जो एक असंबद्ध पाउडर के रूप में नॉन मैटेलिक तथा इनऑर्गेनिक मैटीरियल से बना हो, जिसे विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा एक सेमी फिनिश्ड आइटम के रूप में परिवर्तित किया जाए, फिर आग में तपाने (हीट ट्रीटमेंट) से यह एक सॉलिड आइटम बन जाता है, जो आंशिक क्रिस्टलाइन तथा आंशिक विटरस स्ट्रक्चर होता है। इसे ही हम सेरेमिक उत्पाद कहते हैं। सेरेमिक पदार्थ से अत्याधुनिक उपयोग की वस्तुएँ बनाने की तकनीक ही सेरेमिक इंजीनियरिंग के नाम से जानी जाती है। सेरेमिक इंजीनियरिंग इनऑर्गेनिक, नॉनमैटेलिक मटीरियल्स से सेरेमिक सामान बनाने का विज्ञान और तकनीक है।

इस सूचना क्रांति के दौर में गोल्फ में मैदान से लेकर मिसाइलों तक में सेरेमिक वस्तुओं का उपयोग हो रहा है। फाइबर ऑप्टिक्स, बायोसेरेमिक्स और इंटीग्रेटे इलेक्ट्रॉनिक्स आज के दौर में सेरामिक इंडस्ट्री का नया चेहरा बनकर उभरे हैं।

वर्तमान समय मे सेरेमिक इंजीनियरिंग के तहत औद्योगिक इस्तेमाल के लिए बहुत तेजी से नए-नए सेरेमिक मटीरियल्स का विकास किया जा रहा है। किचन वेयर, कांक्रीट तथा टाइल्स जैसे ट्रेडिशनल सेरेमिक उपयोग अब बहुत पुराने पड़ चुके हैं। सेरेमिक सामान का इस्तेमान अब स्पेसक्राफ्ट में हीट रसिस्टेंट के रूप में भी होने लगा है। सेरेमिक मटीरियल्स का यही विशेष स्वरूप इलेक्ट्रिकल्स, कैमिकल तथा मैकेनिकल इंजीनियरिंग में कई तरह की एप्लीकेशंन को बढ़ावा दे रहा है। सेरेमिक इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजिकल एप्लीकेशन के लिए सेरेमिक्स के कंपोनेंट, डिवाइस, मशीनों की प्रोसेसिंग, फेब्रिकेशन तथा विभिन्न तरह के ग्लास आदि से जुड़ी है।

इस सूचना क्रांति के दौर में गोल्फ के मैदान से लेकर मिसाइलों तक में सेरेमिक वस्तुओं का उपयोग हो रहा है। फाइबर ऑप्टिक्स, बायोसेरामिक्स और इंटीग्रेटेड इलेक्ट्रॉनिक्स आज के दौर में सेरेमिक इंडस्ट्री का नया चेहरा बनकर उभरे हैं। वर्तमान में सेरेमिक इंजीनियर का काम उन्नत प्रोसेसिंग तकनीक की सहायता से असाधरण मेकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, मैग्नेटिक और ऑप्टिकल क्षमताओं में भरपूर मेटीरियल्स डेवलप करना है। गौरतलब है कि सेरेमिक इंजीनियरिंग एक अपारम्परिक कैरियर है। सेरेमिक इंजीनियर बनने के लिए बेहतर डिजाइनर और कल्पनाशील होना नितांत आवश्यक है। कार्य का समय तय रहता है और आप बेहतर सोशल लाइफ जी सकते हैं। सेरेमिक इंजीनियर

का काम दिन-प्रतिदिन चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है, क्योंकि लोग इनोवेटिव प्रोडक्ट डेवलपमेंट और सॉल्यूशन डिजाइन की मांग करने लगे हैं।

सेरेमिक इंजीनियर के रूप में आप निम्न काम कर सकते हैं-

- स्पेस शटल के लिए इम्प्रूव्ड हीट टाइल्स का विकास जो भविष्य की तकनीक से निर्मित यानों को धरती के वातावरण से घर्षण के कारण उत्पन्न गर्मी से बचा सके।
- सेरेमिक के दांत, हड्डियाँ और जोड़ों आदि कृत्रिम अंगों का विकास।
- सेरेमिक सुपर कंडक्टर और ऑप्टिकल फाइबर की मदद से अल्ट्रा फास्ट कम्प्यूटर का विकास।
- सेरेमिक इंजीनियरिंग की बी.टेक, डिग्री के लिए फिजिक्स, केमेस्ट्री और मैथ्स विषयों के साथ बारहवीं उत्तीर्ण होना आवश्यक है। पाठयक्रम में प्रवेश के लिए, प्रवेश परीक्षा भी उत्तीर्ण करनी होती है। बी.टेक. के बाद गेट की परीक्षा देकर इस क्षेत्र में पोस्ट ग्रेजुएशन भी किया जा सकता है। सेरेमिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में चमकीला कैरियर बनाने हेतु उम्मीदवार की बेसिक साइंस में अच्छी पकड़ हो, वह इनोवेटिव हो, उसमें विश्लेषणात्मक दक्षता हो, खुद बेहतर करने की इच्छाशक्ति हो, उसमें टीम को साथ लेकर चलने की योग्यता हो, समस्या को सुलझाने वाला व्यक्तित्व हो, उसमें परस्पर वार्तालाप करने की क्षमता हो तथा बेहतर प्रोडक्ट डिजाइनिंग तथा उसमें बाजार की मांग को समझ सकने की क्षमता हो।

अत्याधुनिक शहरी निर्माण के लिए इम्प्रूव्ड मैटेरियल का विज्ञान और तकनीक के विकास के साथ-साथ इस क्षेत्र का भी बहुत तेजी से विकास हुआ है। इस विकास ने खास क्षेत्रों में स्पेशलाइजेशन की जरूरत भी पैदा कर दी है। सेरेमिक पाउडर के विकास, फेरोइलेक्ट्रिक और डाईइलेक्ट्रिक क्षमताओं का विकास, सोर सेल, नैनोस्ट्रक्चर, तापरोधी मटीरियल्स का विकास आदि कुछ प्रमुख क्षेत्र हैं। सेरेमिक मेटल सिस्टम, कम्पोजिट और सर्जरी की जरूरतों के लिए फाइबर ऑप्टिक मटेरियल के क्षेत्र में विशेषज्ञता होनी आवश्यक है। रूचियों के अनुसार किसी भी तकनीक के विशेषज्ञता आपके कैरियर में चार चाँद लगा सकती है। वर्तमान समय में भारत में सेरेमिक इंडस्ट्री के 15 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रही है। सेरेमिक इंडस्ट्री के विकास के लिए कई तरह के सुधारों के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। इसके चलते इस क्षेत्र में भविष्य काफी चमकीला दिखाई दे रहा है।

सेरेमिक इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री करके आप रिसर्च तथा टीचिंग के क्षेत्र में भी चमकीला कैरियर बना सकते हैं। सेरेमिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में रोजगार की बहुत उजली संभावनाएं हैं। कई बड़ी कंपनियाँ इस क्षेत्र में सेरेमिक इंजीनियरों की सेवाएं लेती हैं। पारम्परिक क्षेत्रों से लेकर अत्याधुनिक तकनीक के क्षेत्रों में सेरेमिक इंजीनियरों की भारी मांग है।

-हरिनारायण
बीकानेर

सुविचार

- **जैसे वैद्य जो दवा दे, उसी में हमारा हित है, ऐसे ही भगवान् जो विधान करे, उसी में हमारा परमहित है।**
- **आपसे कोई पूछे, कभी पूछे कि कहां के हो? कौन हो? स्वत: मनमें आना चाहिए कि मैं भगवान का हूं।**
- **यह नियम है कि जो किसी का बुरा नहीं चाहता, उसके मन में अशुद्ध संकल्पों की उत्पत्ति ही नहीं होती और उनके बिना अशुद्ध कर्म का जन्म ही नहीं होता।**

जम्भेश्वर सुजस

'दोहा'

"अवनी जीव उद्धरणा, संत सद्धारणा शम्भ।
विश नव जातव धारणा, जय जोगेसर जम्भ॥

'छन्द जात त्रिभंगी'

जय हो जम्भेश्वर, पंथ परमेश्वर, निज अवधेश्वर रूप नयो।
जन-मन जयकारा, धन-तन धारा, अवन उचारा, अवतारा।
पीपासर प्यारा, दीन दुलारा पुन प्रजारा, परमारा।
तपस्या तन तारा, भव पर भारा, भल भंयकारा, भूप भया।
परगट परमेश्वर, जय जम्भेश्वर, निज अवधेश्वर, रूप नया।
नव वीसी न्याती, धर्म धराती, वर्ण विनाती, विख्याती।
जम्भदेव जमाती, कर्म कराती, मेहनत भाती, मन थाती।
खिति पर धन ख्याती, परमळ पाती, जबरी जाती, सूंप जयो।
परगट परमेश्वर, जय जम्भेश्वर, नित अवधेश्वर रूप जयो।
धर तापत धूनी, तपस्या तूनी, मन कर मूनी, मज मूनी।
जाचण जीव जूनी, खिसकत खूनी, पाप परूनी, गुण गूनी।
अणभै गत ऊनी, निरमळ नूनी, चित मन चूनी, चुप चयो।
परगट परमेश्वर, जय जम्भेश्वर, नित अवधेश्वर रूप नयो।
वन संपती वेवा, दुनी फळ देवा, सार अभेवा, संभरेवा।
पशु-पक्षी परेवा, हिरणां हेवा, मावन ऐवा, मंज रेवा।
सुरभी कर सेवा, कोड करेवा, जन-जन जेवा, जूप जयो।
परगट परमेश्वर, जय जम्भेश्वर, नित अवधेश्वर रूप नयो।
मोटी कर मंसा, हर-हर हंसा, तापण खंसा, तातंसा।
सालां धर संसा, बार बरंसा, अठव अहिंसा, अवनंसा।
समराथळ जंसा, थळवट थंसा, अंशाय नर अनूप अयो।
परगट परमेश्वर, जय जम्भेश्वर, नित अवधेश्वर रूप नयो।
जांभा धिन जरणा, तपसी तरणा, काव्य ऊचरणा, शुभ करणा।
सुकवि सोइ सरणा, विठू वरणा, भंमर चरणा, चित्त भरणा।
सुख साज संचरणा, हर दुःख हरणा, करुणा सागर रूप कयो।
परगट परमेश्वर, जय जम्भेश्वर, निज अवधेश्वर रूप नयो।

'कलश छप्पय'

भंमर गुणी शुद्ध भाव, सतगुरु तो महिमा सुणी।
अवस ऊधरणी आव, धन्य जाम्भा मोटा धणी॥

-भंवरदान विठू 'मधुकर'
गांव माडवा, जिला बाड़मेर (राजस्थान)

ना भूलो परमेश्वर का ध्यान

ना भूलो परमेश्वर का ध्यान,
यही तो है अपने जीवन प्राण।
यह सब संगी कुछ ही दिन के,
तुम चल रहे भरोसे जिनके।
समझदार यह संग्रम ज्ञान,
ना भूलो परमेश्वर का ध्यान।
जग के वैभव, बल, जन, धन में,
रहना निरासक्त इस तन में।
छोड़ के इन सबका अभिमान,
ना भूलो परमेश्वर का ध्यान।
केवल सर्वाधार यही है,
सुंदर सुखमय सार यही है।
जो कि अति सूक्ष्म, अतुल महान,
ना भूलो परमेश्वर का ध्यान।
'ममता देह गेह' की तजकर,
आ जाओ सत पक्ष में भजकर।
'जम्भेश्वर' से तुम चाहो कल्याण,
ना भूलो परमेश्वर का ध्यान।

-सुनीता बिश्नोई, गजसिंहपुर

मेरा संदेश

- मैं संदेश लिख रही हूँ अपने समाज को। क्यों भूल रहे हो अपने ही ताज को। कर रहे हो अपने पर इतना नाज क्या?
- आपने तो भगवान से बड़ी उपाधि को हासिल कर लिया है। भगवान ने दिया जीने का अधिकार पर आपने छीन लिया है। जन्म से पहले ही बेटियाँ गर्भ में मरवाई जाती हैं। दहेज न लाने की कारण नवविवाहित जलाई जाती है।
- दहेज प्रथा, कन्या भ्रूणहत्या सभी में हमारा हाथ है। आप क्यों नहीं समझते यह कितना बड़ा पाप है। हर समाज के बारे में भला-बुरा कहते हैं, पर खुद को नहीं समझते हैं।
- मेरी अब समाज से यही करुण पुकार है। सम्पन्न समाज बनाने की हमें जलानी नई चीत्कार है। सारी बुराइयों में सकल समाज जिम्मेवार है। बुराइयों को दूर करके ही हमें 'बिश्नोई' कहलाने का अधिकार है।

- रेनू राहड़, आदमपुर

पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ विकास

पर्यावरण संरक्षण और विकास का आपस में बहुत सुग्रंथित सम्बन्ध है। वो इसलिए क्योंकि शायद हमारे विकास के मौजूदा प्रतिमान ने पर्यावरण को बहुत नुक्सान पहुंचाया है। पर मेरे विचार से पर्यावरण का संरक्षण भी उस हवाई विकास के जंजाल में हमको फंसाने का एक नया तरीका मात्र है, असल जरूरत है पर्यावरण की रक्षा करने की। हमारी प्राथमिकता इलाज नहीं उस समस्या को रोकने की होनी चाहिए। पर्यावरण संरक्षण और मौजूदा विकास में इसकी भूमिका को समझने के लिए हमें टिकाऊ विकास के पर्यावरणीय, सामाजिक और अर्थशास्त्रीय मॉडलों में GDP आधारित मॉडल को समझना भी जरूरी है।

भारतः एक प्रकृति सेवक से विकासशील देश तक

सन् 1730, ग्राम खेजड़ली–जोधपुर, राजस्थान में बिश्नोई पंथ के 363 पुरुष, महिलाएं एवं बच्चों ने पेड़ों की रक्षा करते हुए राजा के सिपाहिओं के हाथों अपनी जान गवाई। पर्यावरण की रक्षा के लिए ये घटना सम्पूर्ण विश्व के लिए एक प्रेरणास्रोत बनी और 19वीं सदी में इसी सोच ने भारत में 'वन सत्याग्रह' और 'चिपको आंदोलन' एवं कई देशों में 'ट्री हग्गर' के रूप में प्रकृति की रक्षा में जन आंदोलनों को मजबूती दी। हमारी सभ्यता प्राचीन काल से ही प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठा कर चलने वाले समाजों में से एक है, जिसने प्रकृति की रक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में रखने से भी तनिक नहीं सोचा। शायद उनको ये ज्ञात था कि प्रकृति के संतुलन में ही मानव जाति की भलाई और विकास है। पर्यावरणीय अवनति के प्रति असहिष्णुता भारत के प्राचीन लेखों में शामिल है, जिसमें मानव धर्मशास्त्र (मनु स्मृति) इस नजरिये से विश्वभर में चर्चित है। हमारे आधुनिक युग के कानून जैसे पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 इत्यादि भी इन्हीं शास्त्रों के ही रूप लगते हैं।

इस बात से भी हम इन्कार नहीं कर सकते कि वैश्वीकरण के युग ने न सिर्फ हमारे पर्यावरण को प्रदूषित किया बल्कि इससे हमारी जीवन शैली एवं हमारी संस्कृति भी प्रभावित हुई। जिस प्रकृति को हमने देवी देवताओं के रूप में सदियों से पूजा आज हमने उसी को प्रदूषण से एवं प्रकृति ध्वंसी 'टेक्नोलॉजी' से पूरी तरह नष्ट किया या कर रहे हैं। हमारे सामने कुछ ऐसी चुनौतियाँ आई जिसको पैदा तो हमने किया लेकिन वो सब बहुत नया था और जब तक हमारे पास इन पार्श्व प्रभावों को समझने की काबिलियत आई, बहुत देर हो चुकी थी। हम ऐसे मुकाम पर थे जहाँ से वापस जाना बहुत बड़ा जोखिम हो सकता था या फिर ऐसा समझ लीजिये कि वापसी का रास्ता बहुत कष्टकर था क्योंकि हम उन सुविधाओं के आदि हो चुके थे और शहरी जीवन शैली से पाषाण युग में जाना शायद कोई पसंद नहीं करता। दूसरी समस्या ये भी थी कि किसी ने भी इन बड़े पार्श्व प्रभावों के बारे में कभी कल्पना नहीं की थी क्योंकि उस समय हमारा विज्ञान उतना विकसित नहीं हुआ था। आज ग्लोबल वॉर्मिंग या जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से सम्पूर्ण विश्व प्रभावित है।

बांधों और बैराजों के निर्माण से जहाँ हमने बिजली पैदा की वही हमने अपने नदियों का गला घोंट दिया और उसमें रहने वाले मछलियाँ और अन्य जीवों को खत्म ही कर दिया। जिन जंगलों से हमारे आदिवासी भाई सैकड़ों सालों से अपना जीवन यापन करते आये हैं, हमने उनसे वो भी छीनना शुरू किया और उनको अपने पुश्तैनी जीवन एवं घर से, जड़ से ही उखाड़ना शुरू कर दिया। जिस कृषि प्रधान देश में नदियों के पानी द्वारा सिंचाई एवं उसके द्वारा बाढ़ में

लाये गए उपजाऊ मिटटी से शुद्ध खेती होती थी आज वो पानी उद्योगों और शहरों के विकास के लिए मोड़ा जा रहा है, मिट्टी के उपजाऊता को बढ़ाने के लिए फर्टिलाइजर और तमाम तरह के केमिकल छिड़के जा रहे हैं। इससे खेती तो बढ़ी लेकिन लोग कैंसर और कई अपंग बनाने वाले बिमारियों के शिकार हुए, हमारा भूगर्भ जल स्तर इतना गिर गया कि हमारे बोरवेल पानी से साथ जहर उगलने लगा और पंजाब जैसे कृषि प्रधान राज्यों में किसान कैंसर जैसे गंभीर बिमारियों से जूझ रहे हैं। बिजली भी मिली लेकिन शुद्ध हवा, शुद्ध जल एवं अप्रतिकार्य पर्यावरण प्रभाव के बदले में। और इन सब बातों का साक्षात प्रमाण हमें भारत के हर क्षेत्र में देखने को मिलता है, वैज्ञानिक रिपोर्ट भी मिलती है।

अब सवाल ये है कि क्या हमारा मौजूदा विकास का मॉडल जो कि उत्पादन आधारित है- जीवन स्तर एवं मानवीय जरूरतों को भी इस विकास में जगह दे पाएगा? स्वास्थ्य रहना भी जरूरी है, पर क्या आप गरीब और अनपढ़ बने रहना पसंद करेंगे? और अगर आपके पास आय का सुरक्षित जरिया आ जाता है तो क्या आप प्रदूषित हवा और गंदे पानी के साथ जीना पसंद करेंगे? संस्कार और धर्म का पालन भी जरूरी है पर क्या आप उन सिद्धांतों के लिए अपने परिवार को भूखा रख पाएंगे? इन सभी प्रश्नों का उत्तर है- पर्यावरण संतुलन एवं सामाजिक संतुलन के महत्व को समझते हुए समावेशी विकास। जिस विकास से हमारे जरूरतों का पर्याप्त मात्रा में उपभोग भी हो, और हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी पर्याप्त संसाधन बच सके, इसी को हम टिकाऊ विकास का मूल आधार भी कह सकते हैं।

वर्तमान विकास में लाभार्थी और प्रभावित कौन ?

हम जब भी विकास की बात करते हैं, ये व्यापक रूप से आर्थिक विकास को दर्शाता है, जिसे कई बार गलत ढंग से जीवन की गुणवत्ता से भी जोड़ दिया जाता है। जिस GDP यानि 'कुल घरेलू उत्पाद' से इस विकास को हमारे देश में प्रमाणित किया जाता है, उसकी सबसे बड़ी कमी है उसमें सामाजिक एवं पर्यावरणीय कीमतों का न जुड़ना बल्कि उन दुष्प्रभावों को कम करने के लिए और संसाधनों का विकास करना जिससे GDP दर बढ़ती है। ये कहीं से भी पर्यावरण संरक्षक विकास नहीं है, अपितु हमारे मूल्यवान संसाधनों का हस्तांतरण मात्र है- गरीबों से अमीरों को। उदहारण के लिए सोनभद्र में कोयला आधारित कई थर्मल पॉवर प्लांट लगाये गए, वहाँ का वायु तो प्रदूषित किया ही, वहाँ के जल स्रोतों को भी जहरीला बना दिया गया। कोयला कंपनी को फायदा पंहुचा और बिजली बनाने वाली कंपनी ने भी मुनाफा कमाया। बिजली दी गयी उन तमाम बड़े कारखानों को और शहरी निवासियों को, GDP के नजरिये से यह एक सफल विकास का मॉडल माना जा सकता है।

रिहंट बाँध, जो कि सिंचाई के लिए बनाया गया था क्षेत्र के किसानों को लाभ पहुचाने, सबसे पहले वहाँ के सैकड़ों किसानों को विस्थापित किया, उसके बाद रिहंट बाँध के आस-पास कई कारखाने आने शुरू हुए। कोयले खदानों से वहां के जंगल, पहाड़ नष्ट हुए, भूगर्भ जल का स्तर भी गिरा एवं दूषित हुआ, वायु में प्रदूषण फैला, वहां की नदियां जो जीवनदायिनी थी आज कई तो लुप्त ही हो गए। सन् 1950 से पहले सोनभद्र बहुत खुशहाल हुआ करता था, घने जंगल थे, वहाँ के आदिवासी पर्यावरण से अपना जीवन यापन करते थे, जीवन आत्म-निरंतर था और पर्यावरण की रक्षा वे अपना धर्म मान कर करते थे, पहाड़ों और जंगलों को पूजते थे। वन संरक्षण अधिनियम एवं पर्यावरण संरक्षण अधिनियम तो 1980 बाद में आया, इससे कहीं ज्यादा सख्त कानून व्यवस्था यहां के वन निवासी समुदायों ने बनाया हुआ था जो सैकड़ों वर्षों से पालन करते आये है।

आज आलम ये है कि रिहंट बाँध के पानी में पारा (Mercury) जैसे जहरीले भाड़ी धातु की मात्रा अत्यधिक हो गयी है और ये वहां के खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर चुकी है और वहाँ के गरीब आदिवासी आज

बुरी तरह प्रभावित है। क्या उनको इस विकास का फायदा मिला? दिल्ली जैसे शहर का पानी भी आज उतना ही प्रभावित है, यमुना का एक नजारा ही काफी है समझने के लिए। लेकिन शहरों में लोगों के पास संसाधन मौजूद हैं– आर.ओ., प्योर इट, एक्वागार्ड जैसे यंत्र अब आपको हर घर में देखने को मिल ही जाएगा, जिनके पास नहीं है वे बाजार से 20 लि. का बोतल 30 से 40 रुपये में खरीद सकते हैं। कुछ शहरों के पिछड़े इलाकों में तो वाटर ATM की सुविधा भी लाई जा रही है, जहाँ 5 रुपये प्रति लीटर पेय जल की व्यवस्था भी दी जा रही है। पर सवाल ये है कि क्या ये सुविधाएं ओबरा, रेनुकूट और सोनभद्र के आदिवासिओं, किसानों और अन्य गरीब तबकों को कभी नसीब होगी या फिर वो कभी इस काबिल बन पाएंगे कि उन सुविधाओं को हासिल कर पाये? क्या वो दिन अब कभी आ पाएगा जब सिंचाई के लिए या फिर मछलियों को पालने क लिए उनको रिहंट नदी का शुद्ध जल मिलेगा? उनके पास पीने के लिए वही दूषित हैण्डपम्प और सिंचाई के लिए वहीं रिहंट बाँध का जहरीला पानी ही उपलब्ध है।

हमने ना सिर्फ उनसे उनके शुद्ध वायु एवं जल को छीना, हमने उनकी रूढ़िगत आजीविका भी हमेशा के लिए छीन लिया। कभी आत्म निर्भर रहने वाले उन आदिवासियों, किसानों और मछुआरों को हमने मूल जरूरतों जैसे पानी, अनाज, स्वास्थ्य चिकित्सा इत्यादि के लिए सरकार की असफल नीतिओं या फिर उन मुनाफाखोर कंपनियों की सहानुभूति या कुछ संगठनों के झूठे वायदों पर छोड़ दिया और आगे बढ़ गए, देश विकसित होता रहा और जब आज उस विकास के पार्श्व प्रभाव सोनभद्र जैसे सुदूर इलाकों से दिल्ली और अमेरिका तक महसूस किया गया, गंगोत्री पिघलने लगा, सुंदर वन के टापू डूबने लगे, फेलिन–हुदहुद जैसे चक्रवातों का सिलसिला अक्सर महसूस किया जाने लगा तब हमें समझ आया कि शुतुरमुर्ग की तरह मुँह ढक लेने से पर्यावरणीय प्रभाव से पृथ्वी में कोई नहीं बच सकता। तब बात आई टिकाऊ विकास या Sustainable Development की और इसका सरासर मतलब था भारत जैसे विकासशील देशों में उद्योगों के विकास की प्रगति पर लगाम कसने की, क्योंकि आज जो प्रभाव हम महसूस कर रहे हैं उनका प्रारम्भिक बल विकसित राष्ट्रों के द्वारा किये गए कार्बन उत्सर्जन को माना गया। लेकिन अब चूंकि ये बात समझ आ चुकी थी कि सम्पूर्ण पृथ्वी इस वायुमंडल से जुड़ी हुई है और पृथ्वी की वहन क्षमता अब और भार नहीं ले सकती।

भारत जैसे देश की भूमिका बहुत अहम मानी गई। इसका एक कारण ये भी है कि हमने अब तक सहज जीवन जिया और मनुष्य के आध्यात्मिक एवं मानसिक विकास को भौतिकवादी विकास से कहीं अधिक तवज्जो दिया। परन्तु इस कारण हम लोग वैश्वीकरण के प्रति बहुत संवेदनशील भी थे, क्योंकि ये उद्योगपतियों के लिए खुला मैदान था, उनको बस उन भौतिक सुखों का बीज ही बोना था और धीरे–धीरे वो इस मंशा में सफल भी हो रहे हैं। कभी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपने सुखों के लिए हमारा शोषण किया और अब कॉर्पोरेट दलों ने हममें से ही कुछ धनवानों को उन भौतिक सुखों का आदि बनाया और फिर हमारे ही पर्यावरण को नुक्सान पहुंचा कर, हमारे ही संसाधनों को हमें बेचना शुरू किया।

इस इंतियाजी विकास से जहां गरीबी और अमीरी का फर्क बढ़ता भी जा रहा है वहीं पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और उसके प्रभाव भी बढ़ते जा रहे हैं। दिल्ली और लखनऊ जैसे शहरों का विकास तो यहां के संसाधनों के बल पर हो रहा है, लेकिन उस विकास का खामियाजा सोनभद्र जैसे पिछड़े इलाकों को झेलना पड़ता है, जहाँ के मूल निवासी आज 50 साल पुराने भारत से कहीं ज्यादा बदतर स्थिति में हैं।

–संदीप सैनी

अर्बन एस्टेट, हिसार

.......क्रमशः आगामी अंक में

विज्ञान भवन, दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय जाम्भाणी सम्मेलन आयोजित

'भक्ति आंदोलन और वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गुरु जांभोजी का चिंतन' विषय पर 18-19 मार्च, 2017 को विज्ञान भवन, दिल्ली में हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली एवं जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस विशाल सम्मेलन में देश और विदेश के विद्वानों, चिंतकों, लेखकों ने गुरु जांभोजी की बहुआयामी देन एवं उनके महिमामय व्यक्तित्व, उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण पर विचार मंथन किया। इस दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही इस प्रकार रही-

उद्‌घाटन सत्र- दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्‌घाटन 18 मार्च, 2017 को प्रातः 9.30 बजे हुआ। इस उद्‌घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. हर्षवर्धन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री, भारत सरकार थे। उद्‌घाटन सत्र का बीज वक्तव्य महामहोपाध्याय डॉ. वेदप्रकाश बिश्नोई, पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने दिया। इस उद्‌घाटन सत्र में प्रोफेसर उजो किम, हन्नुक विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय, सोउल, दक्षिण कोरिया; प्रोफेसर आर. एस. सराजू, अध्यक्ष हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद; श्री हेमंत बिश्नोई, वरिष्ठ पत्रकार, दिल्ली विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सर्वप्रथम हिंदी विभाग के अध्यक्ष एवं कला संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर मोहन ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत की। अपने बीज वक्तव्य में डॉ. वेदप्रकाश आचार्य ने वर्तमान समय में गुरु जाम्भोजी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रो. उजो किम ने कहा कि गुरु जांभोजी केवल एक देश या क्षेत्र के

उद्‌घाटन सत्र को संबोधित करते डॉ. हर्षवर्धन व मंचासीन अतिथिगण।

महापुरुष न हो करके पूरे विश्व के मार्गदर्शक थे। मुख्य अतिथि डॉ. हर्षवर्धन ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत गुरु जांभोजी जैसे महापुरुषों के योगदान के रहते ही भारत विश्व गुरु कहलाता है। आज भारत में पूरे विश्व को दिशा निर्देश देने की शक्ति है क्योंकि यहां गुरु जांभोजी जैसे महापुरुषों के अनुयायी और उनकी शिक्षाएं जीवित हैं। जांभाणी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्द आचार्य ने इस सत्र के अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र: पूर्वाह्न 11.45 पर प्रथम तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ जिसके मुख्य अतिथि आचार्य देवव्रत, महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री कुलदीप सिंह बिश्नोई, संरक्षक अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने की। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री पी.पी. चौधरी, विधि एवं न्याय राज्य मंत्री भारत सरकार थे। इस सत्र में प्रो. बाबूराम, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र; प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर; प्रो. राजेंद्र सिंह विद्यालंकार, ओएसडी, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश ने विशिष्ट वक्ता के रूप में गुरु जांभोजी के सिद्धांतों एवं उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष श्री कुलदीप सिंह बिश्नोई ने कहा कि विश्व की सभी समस्याओं का समाधान गुरु

सम्मेलन में उपस्थित श्रोतागण।

प्रथम सत्र को संबोधित करते आचार्य देवव्रत जी व मंचासीन अतिथिगण।

जांभोजी की वाणी एवम् उन द्वारा प्रतिपादित धर्म नियमों में है। आचार्य देवव्रत जी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि गुरु जांभोजी केवल कथनी में नहीं बल्कि करने में विश्वास रखते थे। उनके सिद्धांत मानव मात्र के लिए थे। उनके सिद्धांतों पर चलने वाला ही सच्चा बिश्नोई हो सकता है।

द्वितीय सत्र: दोपहर बाद 2 बजे द्वितीय तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ। इस सत्र के मुख्य अतिथि बिश्नोई मदन मोहन गुप्त, अध्यक्ष, मध्यप्रदेश व्यापार संवर्धन मंडल थे। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. टंकेश्वर कुमार, कुलपति, गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार ने की। श्री लादूराम बिश्नोई, संसदीय सचिव, राजस्थान सरकार; स्वामी सुमेधानंद सरस्वती, सांसद, सीकर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस सत्र में डॉक्टर रमेश चंद्र मिश्र, पूर्व रीडर, रामलाल आनंद महाविद्यालय, दिल्ली; डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रोफसर, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय; डॉ. शैलेंद्र शर्मा, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने अपने गंभीर वक्तव्य प्रस्तुत किए। प्रो. टंकेश्वर जी ने कहा की गुरु जांभोजी मानवता के रक्षक और पोषक थे। श्री मदन मोहन जी गुप्ता ने आज के समय में गुरु जांभोजी के सिद्धांतों की महती आवश्यकता बतलाई।

द्वितीय सत्र को संबोधित करते मदनमोहन गुप्त व मंचासीन अतिथिगण।

तृतीय सत्र: सायं 4.00 बजे तृतीय तकनीकी सत्र आयोजित हुआ जिसके मुख्य अतिथि जस्टिस विजय बिश्नोई, न्यायधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर थे। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. कुलवंत वाचस्पति, कुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने की। इस सत्र में श्री हीराराम बिश्नोई एडवोकेट, अध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा और श्रीमती विजयलक्ष्मी बिश्नोई, पूर्व संसदीय सचिव, राजस्थान सरकार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस सत्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संजय राणा और ग्रीनमैन डॉ. विजय बघेल ने गुरु जांभोजी के पर्यावरण संबंधी सिद्धांतों की विवेचना की। डॉ. कुलवंत वाचस्पति ने गुरु जांभोजी के सिद्धांतों पर शोध करने पर विशेष बल दिया। जस्टिस विजय बिश्नोई ने कहा यदि दुनिया को विनाश से बचाना है तो गुरुजी के सिद्धांतों पर अमल करना होगा।

इस प्रकार 18 मार्च को मुख्य हॉल में उद्घाटन सहित 4 सत्रों का आयोजन किया गया। वहीं हॉल नंबर 2 में दो समांतर सत्र भी आयोजित किए गए जिनमें डॉ. देवेंद्र कुमार सिंह गौतम, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर; प्रोफेसर रामरति मलिक, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक; डॉ. विनीता कुमारी, विंसेंट वर्गीस; डॉ. रोहताश कुमार, डॉ. दर्शन पांडे, प्रो. आर.

तृतीय सत्र को संबोधित करते जस्टिस विजय बिश्नोई व मंचासीन अतिथिगण।

सेतुनाथ, कालीकट विश्वविद्यालय; डॉ. वीणा बिश्नोई गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय, हरिद्वार; डॉ. गजे सिंह राजपुरोहित जोधपुर विश्वविद्यालय; डॉ. अनुपम श्रीवास्तव आगरा; श्री अनंत अर्याल, काठमांडू आदि ने गुरु जांभोजी के सिद्धांतों और उनकी देन पर अपने विचार रखे।

चतुर्थ सत्र : 19 मार्च, 2017 को प्रात: सवा 9.15 बजे चतुर्थ तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ जिसके मुख्य अतिथि जस्टिस एल.सी. भादू, पूर्व प्रमुख लोकायुक्त, छत्तीसगढ़ थे। इस सत्र की अध्यक्षता संस्कृत अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष और विख्यात संस्कृत विद्वान डॉ. गणेश दत्त शर्मा ने की। श्री सुखराम बिश्नोई विधायक सांचौर इस सत्र के विशिष्ट अतिथि थे। इस सत्र में प्रो. मिलाप

पूनिया, जे.एन.यू.; डॉ. कृष्ण कौशिक, प्रोफेसर, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, दिल्ली; वरिष्ठ अधिवक्ता एम.सी. मेहता, निकोलस (पेरिस) ने अपने विचार रखे। डॉ. गणेशदत्त जी ने गुरु जांभोजी को भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का रक्षक व पोषेक बतलाते हुए कहा कि ऐसे ही महापुरुषों की तपस्या से आज भारतीय संस्कृति जीवित है। जस्टिस एल.सी. भादू ने कहा कि गुरु जांभोजी ने जिन्हें धर्म नियमों के रूप में प्रस्तुत किया था। आज विभिन्न देशों की सरकारें उन्हीं नियमों को कानूनी प्रावधान बना रही है इससे यह प्रमाणित होता है कि गुरु जांभोजी कितने दूरदर्शी महापुरुष थे।

चतुर्थ सत्र को संबोधित करते जस्टिस एल.सी. भादू व मंचासीन अतिथिगण।

पंचम सत्र: 11.15 बजे पंचम तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ। जिसके मुख्य अतिथि श्री नारायणलाल पंचारिया, सांसद व मुख्य सचेतक राज्यसभा थे। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर रामबक्ष, जे.एन.यू. ने की। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री पब्बाराम बिश्नोई, विधायक फलौदी व श्री रामस्वरूप बिश्नोई वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा थे। इस सत्र में डॉ. श्रीराम परिहार प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय, खंडवा; प्रोफेसर तुलछाराम बिश्नोई, आर. बी. आई. चेयर प्रोफेसर, एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा ने गुरु जांभोजी के चिंतन को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए। अध्यक्ष प्रोफेसर रामबक्ष ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि गुरु जांभोजी की वाणी भक्ति साहित्य की अमूल्य निधि

पंचम सत्र को संबोधित करते श्री नारायणलाल पंचारिया व मंचासीन अतिथिगण।

है। उनका चिंतन मानव मात्र के लिए था। उन्होंने गुरु जांभोजी की वाणी को पाठ्यक्रमों में सम्मलित करने पर विशेष बल दिया। श्री नारायण लाल पंचारिया ने गुरु जांभोजी को अत्यंत ही दूरदर्शी महापुरुष मानते हुए कहा कि यदि विश्व उनकी बातों पर आज भी अमल करें तो सभी समस्याओं से मुक्ति पाई जा सकती है।

समापन सत्र: अपराह्न 2.00 बजे समापन सत्र प्रारंभ हुआ। श्री सी.आर. चौधरी, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री, भारत सरकार थे। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. अश्वनी कुमार बंसल, कुलपति, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर ने की। इस सत्र में श्री अजय बिश्नोई, पूर्व मंत्री, मध्यप्रदेश सरकार; श्री जसवंत सिंह बिश्नोई, अध्यक्ष, ऊन विकास बोर्ड, भारत सरकार; आचार्य अरुण दिवाकर नाथ वाजपेयी, कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला; प्रो. कैलाश चंद्र शर्मा, कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र; आचार्य करमा थानपई बौद्ध गुरु, नेपाल; डॉ. अच्युत अर्याल काठमांडू विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. अच्युत अर्याल ने गुरु जांभोजी के सिद्धांतों की विश्व व्यापकता और आज के संदर्भ में उनकी उपयोगिता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। आचार्य करमा थानपई ने कहा कि गुरु जांभोजी एक जाति या संप्रदाय के गुरु नहीं थे। वे संपूर्ण विश्व को दिशा देने वाले महापुरुष थे और भविष्य में वे उनके सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार पूरे विश्व में करेंगे। आचार्य अरुण दिवाकर नाथ वाजपेयी ने गुरु जांभोजी को उस परंपरा का पोषक बताया जो मानवता का संवर्धन करने वाली रही है। प्रोफेसर कैलाश चंद्र शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने सर्वप्रथम गुरु जांभोजी पर शोध पीठ की स्थापना की थी और वे अपने विश्वविद्यालय में इस शोध कार्य को निरंतर जारी रखेंगे। श्री जसवंत सिंह बिश्नोई ने कहा कि गुरु जांभोजी के नियमों और उनके प्रति श्रद्धा का ही बल है कि आज बिश्नोई समाज पर्यावरण रक्षक, जीव रक्षक समाज के रूप में पूरे विश्व में अपनी पहचान रखता है। श्री अजय बिश्नोई ने आधुनिक तकनीक के माध्यम से गुरु जांभोजी के सिद्धांतों को पूरे विश्व में फैलाने पर बल दिया। प्रो. अश्वनी कुमार बंसल ने अपने वक्तव्य में गुरु जांभोजी के सिद्धांतों को पूर्णता वैज्ञानिक बतलाते हुए उन पर नई दृष्टि से शोध करने पर बल दिया। मुख्य अतिथि श्री सी.आर. चौधरी ने आज के समय की प्रमुख समस्याओं को

समापन सत्र को संबोधित करते श्री सी.आर. चौधरी व मंचासीन अतिथिगण।

रेखांकित करते हुए उनके कारण और निवारण पर चर्चा करते हुए गुरु जांभोजी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। 19 मार्च को दो समांतर सत्र भी हॉल नंबर 2 में आयोजित किए गए जिनमें डॉ. सत्यकेतु सांकृत, अध्यक्ष, हिंदी विभाग; डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. भंवर सिंह सामौर, पूर्व प्राचार्य चूरु; डॉ. जैनेंद्र कुमार; डॉ. अजय कुमार; प्रोफेसर ब्रह्मानंद, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; प्रोफेसर सोनाराम बिश्नोई, पूर्व अध्यक्ष, राजस्थानी भाषा विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय; आईदान सिंह भाटी पूर्व व्याख्याता; डॉ. अब्दुल गफ्फार, हिंदी विभाग, महात्मा बुद्ध विश्वविद्यालय, नोएडा आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए। यह दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन अत्यंत ही सुचारू व व्यवस्थित ढंग से संपन्न हुआ। अन्त में जांभाणी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष स्वामी कृष्णानन्दजी व हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. मोहन ने सभी विद्वानों, अतिथियों व प्रतिभागियों का आयोजन को सफल बनाने के लिए आभार प्रकट किया।

सभी विद्वान प्रतिभागी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि गुरु जांभोजी का भक्ति आंदोलन और लोक जागरण में एक विशेष योगदान था, जिसका शोध करके मूल्यांकन किया जाना चाहिए। गुरु जांभोजी के सिद्धांत मानव मूल्यों की रक्षा हेतु थे। वे मानव मूल्यों के पहरुआ थे। आज मानव मूल्यों की जो दशा है और जिस प्रकार का संकट है उनको देखते हुए गुरु जांभोजी के सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान समय में जो एक धार्मिक व सांप्रदायिक तनाव फैला हुआ है और विश्व युद्ध का खतरा मंडरा रहा है उसमें गुरु जांभोजी एक समन्वयवादी सिद्धांतों के पोषक के रूप में हम सबके मार्गदर्शक हो सकते हैं। विश्व की सबसे गंभीर समस्या 'पर्यावरण प्रदूषण' का समाधान भी गुरु जांभोजी की वाणी एवं सिद्धांतों में निहित है। आज आवश्यकता इस बात की है कि गुरु जांभोजी के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया जाए, उनका पालन किया जाए। आज पूरा विश्व वैश्वीकरण और बाजारवाद के प्रभाव में है। गुरु जांभोजी के सिद्धांत वैश्वीकरण के दौर में मनुष्य को सही रास्ता दिखा सकते हैं। हिंसा एक वैश्विक समस्या है- मनुष्य की मनुष्य के प्रति और मनुष्य की अन्य जीवों के प्रति हिंसा एक बहुत गंभीर समस्या है। गुरु जांभोजी अहिंसा के प्रबल समर्थक पर पोषक थे। उनके सिद्धांतों पर चलकर 'जीव दया पालणी' के सिद्धांत का पालन करते हुए इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। आज का विश्व भौतिकता की चकाचौंध से ग्रस्त है तथा आध्यात्मिकता से दूर होता जा रहा है जिससे मानव अपना मूल पथ भूल चुका है। ऐसी स्थितियों में एक गृहस्थ का जीवन यापन करते हुए भी आध्यात्मिकता कैसे प्राप्त की जा सकती है, यह गुरु जांभोजी के सिद्धांतों से ज्ञात होता है। गुरु जांभोजी की वाणी हिंदी साहित्य ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व भक्ति साहित्य की अमूल्य निधि है, उसको उसी दृष्टि से देखा जाना चाहिए और उस पर शोध किया जाना चाहिए तथा उसे पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जाना चाहिए।

इस राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भारत के कोने-कोने से तो साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया ही था उनके साथ-साथ अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने भी इस संगोष्ठी में भाग लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए। भारत के लगभग 40 विश्वविद्यालयों और 100 से अधिक महाविद्यालय के विद्वानों ने इस संगोष्ठी में सक्रिय रुप से भाग लिया। हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली और जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर के सदस्यों व पदाधिकारियों के साथ-साथ अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा; अखिल भारतीय गुरु जंभेश्वर सेवक दल; अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा; गुरु जम्भेश्वर संस्थान भवन, दिल्ली; अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन; बिश्नोई टाइगर फोर्स; बिश्नोई सभा, हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, कुरुक्षेत्र, गंगानगर, हनुमानगढ़, कांठ, नीमगांव दक्षिण भारतीय बिश्नोई संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ-साथ समाज के अधिकारियों, प्रबुद्ध जनों, संतगण एवं समाज सेवकों ने सक्रिय रुप से भाग लिया। NCR के बिश्नोई बन्धुओं का इस सम्मेलन को सफल बनाने में विशेष योगदान रहा।

-**डॉ. बनवारी लाल सहू,** प्रवक्ता
जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर

मुक्तिधाम मुकाम का मेला फाल्गुन वर्ष 2017

26 फरवरी, 2017 को सम्पन्न मुक्तिधाम मुकाम मेले की तैयारियां सप्ताहभर पहले ही प्रारम्भ हो चुकी थी। इन्हीं तैयारियों के क्रम में 20 फरवरी, 2017 को मेला मजिस्ट्रेट की अध्यक्षता में मौका निरीक्षण करके मेला व्यवस्थाओं का जायजा व सभी प्रशासनिक अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। मुक्तिधाम मुकाम की पवित्र समाधि स्थल भूमि पर दिनांक 22 फरवरी, 2017 से जम्भसार कथा मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य श्री स्वामी रामानंद जी महाराज के सान्निध्य में स्वामी विद्यानंद शास्त्री जी महाराज समेलिया भीलवाड़ा ने कथा वाचन किया।

मेला व्यवस्था में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के महासचिव श्री विनोद धारणिया, श्री भगवानाराम मांझू उपाध्यक्ष सांचौर, श्री रूपाराम कालिराणा सचिव फलोदी, श्री रामनिवास बुधनगर, जोधपुर; श्री पूनमचन्द लोहमरोड़ रायसिंह नगर सभी ने दिनांक 20 फरवरी, 2017 से पूर्व ही मेला व्यवस्था के लिए मुकाम रहकर प्रत्येक कार्यों की मौका समीक्षा एवं पार्किंग यातायात, कानून व्यवस्था, बैरियर, बैरीकेटिंग हवन यज्ञ व्यवस्था, स्टेज की व्यवस्था सभी व्यवस्थाओं को सुचारू करवाना प्रारम्भ किया।

मुक्तिधाम मुकाम मेला फाल्गुन में समस्त भारतवर्ष से श्रद्धालुओं का आना 20 फरवरी, 2017 से प्रारम्भ हो गया। सभी जिला सभाओं के पदाधिकारी एवं ग्राम ईकाई अध्यक्षों ने अपनी-अपनी धर्मशालाओं में सेवा देना प्रारम्भ कर दिया। अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल ने 24.02.2017 की सुबह मुकाम मेला व्यवस्था में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के निर्देशन में मेला व्यवस्था का कार्य प्रारम्भ कर दिया। श्री रामसिंह कस्वां, अध्यक्ष, अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल; महासचिव अजमेर गोदारा एवं सभी जिलाध्यक्ष श्री सहदेव कालीराणा, श्री सूरजभान गोदारा, श्री रिछपाल बैनीवाल, श्री निरंजन खिचड़, श्री सुल्तान धारणिया, श्री हंसराज गोदारा, श्री कमलेश सारण एवं कार्यकारिणी के पदाधिकारियों व सेवकदल के माननीय सदस्यों ने सेवा कार्य प्रारम्भ किया। सम्भराथल धोरा, पीपासर, मुकाम मेला बाजार, यज्ञशाला, गौशाला सभी स्थलों पर सेवा कार्य प्रारम्भ किया।

25 फरवरी, 2017 की शाम कथा जम्भसार समाप्ति पर जागरण से पहले खेजड़ी की बेटी नाटक का मंचन शाम 7 बजे से 10 बजे तक स्टेज सभा स्थल पर जयपुर अशोक राही टीम द्वारा मंचन किया। जो सम्वत् 1787 खेजड़ली खडाणा के 363 अमर शहीदों पर आधारित था। अमावस्या की रात्रि को सभा स्थल पर जागरण प्रारम्भ हुआ। सभी समाज के विद्वान संत, महापुरुषों द्वारा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा बताये हुए उन्नतीस नियमों पर विस्तृत साखियां, भजन, कीर्तन व उपदेश का कार्यक्रम हुआ। मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानन्द जी महाराज के श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के द्वारा बताये मार्ग पर उन्नतीस नियमों का पालन करते हुए चलने का आह्वान किया एवं पर्यावरण व वन्य जीवों के रक्षा की बात कही। जागरण मंच संचालन श्री किसन खिलेरी मध्यप्रदेश, श्री हीरालाल गोदारा सरनाऊ ने किया।

26 फरवरी, 2017 को पर्यावरणविद् श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की पवित्र भूमि पर सुबह सूर्य उदय के साथ विशाल यज्ञ मुक्तिधाम मुकाम समाधि स्थल व सम्भराथल धोरा पर प्रारम्भ हुआ। इसी दिन सुबह अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा रक्तदान शिविर को श्री हीराराम भंवाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा; श्री पब्बाराम बिश्नोई विधायक ने प्रारम्भ किया। इस रक्तदान शिविर में बिश्नोई समाज के सभी सामाजिक संगठनों ने सहयोग किया। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा आयोजित बिश्नोई समाज का खुला अधिवेशन 11 बजे सभा स्थल मेला परिसर में श्री विनोद धारणिया महासचिव अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा खुले अधिवेशन की विधिवत् घोषणा की व रूपाराम कालिराणा सचिव को मंच संचालन के लिए अधिकृत किया व मंच की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। श्रीराम ज्याणी रामड़ावास ने जाम्भोजी, वील्होजी के बारे में बताया। श्री रामस्वरूप मांझू, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने सामाजिक गतिविधियों एवं सामाजिक विकास की विस्तृत जानकारी खुले अधिवेशन में दी एवं भावी कार्यक्रमों की भी जानकारियां दी। श्री एम. बीरबल बिश्नोई दक्षिण भारत हुबली कर्नाटक ने सामाजिक विकास का आह्वान किया। सामाजिक कार्यों में सहयोग की बात कही। श्री रामसिंह कालिराणा से.नि. आई.पी.एस. ने महासभा के संविधान धाराओं एवं सामाजिक सम्पति ट्रस्टों के अधिकार के बारे में जानकारी जो भी सम्पति कोई ट्रस्ट या संस्थाएं जनता के चंदे से खरीदेगी या निर्माण करवाएगी उस सम्पति पर महासभा का अधिकार होगा। सभी समाज की रजिस्टर्ड संस्थाओं एवं ट्रस्टों को अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के अंदर अपना रजिस्ट्रेशन करवाना होगा।

श्री नारायणराम डाबड़ी जिला अध्यक्ष जोधपुर ने भी सामाजिक सभी ट्रस्टों व संस्थाओं को महासभा के अधीन रजिस्ट्रेशन करवाकर अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के निर्देशानुसार कार्य करने का आह्वान किया। श्री रतनाराम

खुले अधिवेशन में उपस्थिति अतिथिगण।

रक्तदान शिविर में रक्तदान करते रक्तदाता।

बिश्नोई ने मेला व्यवस्था, यातायात, ट्रैफिक, कानून व्यवस्था और रक्तदान पर विचार रखे। श्री रामपाल भवाद अध्यक्ष बिश्नोई टाईगर फोर्स, राजस्थान ने पर्यावरण व वन्य जीवों की रक्षार्थ संघर्ष करने वाले युवाओं का धन्यवाद एवं राज्य सरकार से वन्य जीव अधिनियम को कठोर एवं वन्य जीव रक्षकों पर हो रहे झूठे मुकदमों की जांच करवाने की मांग की। श्री ओमप्रकाश लोल संगठन मंत्री टाईगर फोर्स ने कहा कि वन्य जीव एवं 363 अमर शहीदों के स्थल खेजड़ली को राष्ट्रीय शहीदी स्थल घोषित करने की मांग भारत सरकार से समाज करे।

श्री सहीराम भादू, पूर्व प्रधान, नोखा ने उन्नतीस नियमों पर बताया व सामाजिक व्यवस्थाओं पर अपनी बात रखी। श्री बिहारी लाल बिश्नोई युवा भाजपा नेता ने समाज के विकास, नेतृत्व चुनाव एवं सभी सामाजिक संगठनों व संस्थाओं से सामाजिक सहयोग करने की बात कही व राज्य सरकार द्वारा सलमान प्रकरण से एस.एल.पी. दायर करने एवं विद्यालयों से नीली ड्रेस बदलने पर राज्य सरकार का समाज की तरफ धन्यवाद किया। श्रीमती निर्मला बिश्नोई, अति. पुलिस अधीक्षक, राजस्थान पुलिस ने सभी युवाओं को अच्छा कार्य करने एवं संस्कारवादी बनने का आह्वान किया।

श्री हीराराम बिश्नोई पूर्व अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने शिक्षा संस्कार सामाजिक विकास पर विशेष बात कही। उन्नतीस नियमों पर चलकर समाज विकास की बात कही। श्री रामसिंह कस्वां राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय बिश्नोई सेवकदल ने सेवकदल की सेवा व अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के सेवकदल परिसर में करवाए निर्माण कार्यों पर बात रखी। श्री दुड़ाराम पूर्व संसदीय सचिव, हरियाणा ने शिक्षा सामाजिक उत्थान, संस्कार, व्यवस्थाओं पर विशेष बात रखी। समाज के हर राजनैतिक आधार को कायम रखने का आह्वान किया।

श्री भगवानाराम मांझू रिटायर्ड अति. पुलिस अधीक्षक सांचौर ने मेला आसौज से आज तक हुए निर्माण के विकास कार्यों की समस्त जानकारी सेवकदल, धर्मशाला, मन्दिर सम्भराथल, जाम्भा निर्माण कार्य अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा करवाए कार्य मेला व्यवस्था की जानकारी दी। महासभा भावी कार्यक्रमों की जानकारियां दी। श्री सुखराम विधायक सांचौर ने समाज की प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए संस्कार सुख, शिक्षा एवं संगठन पर विशेष खुल मंच के विस्तृत जानकारी दी। इससे ही समाज का विकास होगा। समाज संगठित होना चाहिए।

श्री पब्बाराम विधायक फलोदी ने चौ. बिश्नोई रतन भजनलाल जी, श्री पूनमचन्द जी, श्री रामसिंह खोखर लोह पुरुष, श्री रामनारायण जी के सामाजिक विकास कार्यों एवं नेतृत्व को याद किया व रक्तदान मेला व्यवस्था व सेवकदल सेवा कार्य की प्रशंसा की। श्री लाधुराम बिश्नोई संसदीय सचिव ने प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन व शिक्षा एवं सामाजिक विकास पर सभी को सहयोग करने का आह्वान किया। सभी सामाजिक विकास कार्यों में संभाग के हर व्यक्ति को सहयोग करने की बात कही। श्री हीराराम भंवाल, अध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने महासभा द्वारा करवाए विकास के निर्माण कार्यों एवं मेलों की परम्परा श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के उन्नतीस नियमों एवं वील्होजी द्वारा किए समाज सुधार कार्य, मेला के मूल उद्देश्य धर्म व समाज के बारे में सोच विचार मनन कर समाज का विकास करना होता है। चरित्र और अनुशासन होगा तो शिक्षा की कमी नहीं रहेगी।

भारत युवाओं का देश है। आज बिश्नोई समाज के युवाओं ने भी भारी रक्तदान मानवता के लिए किया। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने सभी जिला अध्यक्षों को निर्देश दिया है कि जिला मुख्यालय पर उच्च शिक्षा के कोचिंग सेंटर खोलकर प्रतिभावान समाज के युवा छात्रों की समाज मदद करे। मेला व्यवस्था में सहयोग करने वाले प्रशासनिक अधिकारियों एवं अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल का धन्यवाद करता हूँ। साथ ही ग्राम पंचायत मुकाम के सरपंच श्री रविन्द्र, श्री गंगाराम पूर्व प्रधान, श्री रामलाल व सभी ग्रामवासियों का धन्यवाद उन्होंने मेला व्यवस्था में सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

आचार्य स्वामी रामानन्द जी महाराज ने बताया कि आज से ठीक 480 वर्ष 3 माह 5 दिन पहले श्री गुरु जाम्भोजी ने समाधि ली। जाम्भोजी की वाणी संस्कृति, धार्मिक व उन्नतीस नियमों से ही समाज का चहुंमुखी विकास होगा।

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा समाज की सर्वोपरि संस्था है। सभी संस्थाएं महासभा के अधीन निर्देशन में ही कार्य करें। समाज चार बिन्दुओं पर चल रहा है- त्याग, तप, मर्यादा, न्याय और मर्यादित रहकर समाज की सेवा करें।

श्री कुलदीप बिश्नोई, संरक्षक, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा ने श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित किए। समाज के चहुंमुखी विकास की कामना की। बिश्नोई समाज के खुले अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए सृष्टि के निर्माणकर्त्ता परमपिता परमात्मा के आशीर्वाद से हर इन्सान के अंदर आपसी प्रेम भाईचारा व पर्यावरण की रक्षा एवं गरीब इन्सान की मदद करना ही मानवता का मानव धर्म है। मानवता व मानव कल्याण के लिए हर इन्सान की मदद जरूरी है। पर्यावरण रक्षा चार प्रकार से की जा सकती है। प्रदूषण न फैलाना, ध्वनि प्रदूषण नहीं करना, सार्वजनिक स्थलों पर कूड़ा-करकट नहीं फैंकना, घर का वातावरण प्रेमपूर्वक रखना, यह चारों पर्यावरण रक्षा के लिए आवश्यक है। जन्म से बच्चों को संस्कारित करना, अपराध के बारे में जानकारी देना व होने वाले नुकसान के बारे में बताना, माता-पिता की सेवा करना ही मानव धर्म है।

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के सामाजिक निर्णय के अनुसार समाज के हर विकास में सहयोग करूंगा, पर समाज के नियमों के तहत ही ट्रस्ट या संस्थाएं समाज का कार्य करें। समाज के सभी संगठनों एवं सेवकदल का आभार व्यक्त किया।

सेवक दल अध्यक्ष को गाड़ी की चाबी भेंट करते श्री देवेन्द्र जी बूडिया।

श्री देवेन्द्र बुडिया ने अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल के लिए एक स्विफ्ट गाड़ी दान में दी। श्री कुलदीप बिश्नोई द्वारा चाबी श्री रामसिंह कस्वां अध्यक्ष सेवकदल को सौंपी गई। दान दाता श्री देवेन्द्र बुडिया का धन्यवाद किया। बिश्नोई समाज के खुले अधिवेशन कार्यक्रम का मंच संचालन रूपाराम कालिराणा, सचिव व विनोद धारणिया महासचिव ने किया। मंच व्यवस्था में श्री भगवानाराम उपाध्यक्ष, श्री रामनिवास बुधनगर का विशेष योगदान रहा।

-विनोद धारणिया, महासचिव
अ.भा. बिश्नोई महासभा, मुकाम,
नोखा, बीकानेर (राज.)

बिश्नोई मन्दिर पंचकूला का 12वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

पंचकूला के सैक्टर 15 में स्थित बिश्नोई मन्दिर का 12वां स्थापना दिवस सैकड़ों बिश्नोई बन्धुओं ने प्रातः हवन करके हर्षोल्लास से मनाया। रात्रि को बिश्नोई मन्दिर में गुरु जम्भेश्वर महाराज का जगारण हुआ तथा अनेकों लोगों ने गुरु प्रसाद ग्रहण कर बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर महाराज का दिव्य आशीर्वाद प्राप्त किया।

बिश्नोई सभा, पंचकूला के संस्थापक प्रधान श्री अंचितराम गोदारा ने बताया कि बिश्नोई मन्दिर, पंचकूला के नींव बिश्नोई रत्न एवं हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौ. भजनलाल जी ने 25 मार्च, 2006 को अपने कर-कमलों से रखी थी। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश व अन्य राज्यों से आने वाले बिश्नोई बन्धुओं व सभी वर्गों के लोगों के ठहरने की अत्याधुनिक सुविधा उपलब्ध है। श्री गोदारा ने बताया कि रात्रि जागरण एवं हवन कार्यक्रम में श्री राजीव शर्मा, IAS (सेनि.) एवं वर्तमान में हरियाणा राज्य स्वर्ण जयंती अथारिटी के संयोजक एवं पंचकूला के चीफ एडीशनल मजिस्ट्रेट श्री राहुल बिश्नोई, श्री चौथाराम ज्याणी

उपप्रधान बिश्नोई सभा, हिसार, डॉ. मदन खिचड़, रायसाहिब डेलू, रविन्द्र खदाव, हनुमान खिचड़, पंजाब के पीसीएस अधिकारी श्री प्रेमचन्द अरोड़ा, श्री एच.एस. मलिक, एडवोकेट दर्शन सिंह बिश्नोई, जगदीश मांजू, सुभाष जांगू, दलीप गोदारा, डी.एस.पी. दलीप कुमार, सन्दीप धारणियां एस.ई. सिंचाई विभाग, भूप सिंह बिश्नोई HCS (सेनि.), एडवोकेट अजय जौहर आदि गणमान्य सदस्य मौजूद थे।

बिश्नोई समाज के पर्यावरण प्रेमियों ने रामलीला मैदान से जन्तर-मन्तर तक चेतना रैली के साथ किया श्रमदान

17 मार्च, 2017 को विश्व के प्रथम पर्यावरणविद् श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के अनुयायी पर्यावरण प्रेमी बिश्नोई समाज की ओर से स्वच्छ भारत अभियान की सफलता व पर्यावरण के संरक्षण हेतु दिल्ली के रामलीला मैदान से जन्तर-मन्तर तक पर्यावरण चेतना रैली निकालकर लोगों को जागरूक किया। अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा, जोधपुर के सचिव रामनिवास हांणिया ने बताया कि पर्यावरण एवं वन्य जीव संरक्षण संस्थान, जोधपुर के अध्यक्ष व पर्यावरणविद् खम्मूराम बिश्नोई के नेतृत्व में, आदर्श नवज्योति विकास संस्थान, जोधपुर व अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के सहयोग से सभी सेवकों ने अपने सिर पर टोपी व गले में विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय स्लोगन लिखी तख्तियां लटकाए हुए कई सैकड़ों महिला-पुरुषों ने विशाल जागरूकता रैली निकालकर राजधानी के वासियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागृत करने की विशेष मुहीम चलाई।

रैली के बाद जन्तर-मन्तर पर साफ-सफाई और श्रमदान का कार्यक्रम चलाया गया। तत्पश्चात् जन्तर- मन्तर पर ही पर्यावरणीय धर्म सभा का आयोजन हुआ। इस धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए पर्यावरणविद खम्मूराम बिश्नोई और अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष साहबराम रोझ, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सुखराम बोला, राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीराम सोहू, प्रदेश अध्यक्ष शिवराम जाखड़, प्रदेश उपाध्यक्ष बलदेव सोऊ, आदर्श नवज्योति विकास संस्थान के महेश बिश्नोई, बिश्नोई टाईगर फोर्स के रामनिवास धोरू, बेटी क्लासेज के निदेशक रामरखराम जाखड़, लेखक महेन्द्र सिंह राही, पिराराम खावा, राष्ट्रीय महासचिव मांगीलाल बूडिया, औसिया उपप्रधान और जीव रक्षा सभा जोधपुर के जिला अध्यक्ष राकेश माचारा, पूर्व जिला अध्यक्ष व एकलखोरी सरपंच सहीराम सियाग, जोधपुर सभा के संगठन मन्त्री फरसाराम सोऊ, दयाराम खिचड़, पीराराम धायल, गंगाराम गोदारा वापी, मोहन डूडी मुम्बई, दिनेश जांगू, अरमान कड़वासरा, नेमाराम माचरा, बुद्धाराम मांजू सहित

अनेकों वक्ताओं ने लगातार प्रदूषित हो रहे पर्यावरण को बचाने व संरक्षण करने की बातें कही।

इस पर्यावरण चेतना रैली, धर्मसभा व श्रमदान कार्यक्रम में हरसदेव तोमर, प्रतीक गोदारा, कर्नल सज्जन सिंह, फरसाराम कावा, केहराराम गोदारा, अर्जुनराम खिलेरी, हरीराम गोदारा, डॉ. उषा गोदारा, रूगनाथ ऐचरा, विजय सिंवर, श्रवण गोदारा, प्रकाश पूनिया, किसनाराम बांगड़वा, बगडूराम, भीखराम सांचौर, भगवानाराम पंवार, किशन भादू, मोहन पंवार बडोदरा, मोहन डूडी पुणे, बुद्धाराम डेलू एडीएम, बिरामाराम जाणी, राधेश्याम पेमाणी, मनोहर ईशरवाल, रोहित पंवार, श्याम काच्छबाणी, भंवरी कालिराणा, माया गोदारा, नीतू सुथार, मोनिका खिचड़, जमना बिश्नोई, मनीष सारण, सुनील सिदानी, विरेन्द्र बोला, विजय गोदारा, ओमाराम ढाका, सुनील माचरा, अशोक मास्टर, किशनाराम भादू, हरिराम गोदारा, पुनाराम मांजू, गिरधारी सिंवर, दिनेश जाखड़, सुखराम कंवर, गुमानाराम सोऊ सहित सैकड़ों महिला-पुरुषों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन आकाशवाणी उद्घोषक चन्द्रभान खिचड़ ने किया। धर्मसभा में पर्यावरणविद खम्मूराम बिश्नोई पर सरदार महेन्द्र सिंह राही द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

-रामनिवास हांणिया

सचिव, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा,

जोधपुर, मो.: 9982184241

एक निवेदन

बिश्नोई समाज की एक वेबसाइट bishnoisect.com का निर्माण कार्य चल रहा है, जिसमें विभिन्न भाषाओं में साहित्य उपलब्ध रहेगा। इसी सम्बन्ध में यदि किसी भी सज्जन के पास जाम्भाणी साहित्य (पीडीएफ ग्रन्थ, आपके प्रकाशित लेख, बिश्नोई रीती रिवाज के विवाह गीत, श्री गुरु जाम्भोजी के भजन साखियाँ, आरतियां हरजस, ऑडियो एवं वीडियो कोई भी), समाज से जुड़े दुर्लभ चित्र, ऐतिहासिक एवं बलिदान गाथाएं, पुरातन जानकारियां, हस्तलिखित ग्रन्थ आदि कुछ भी हो, तो वे नीचे लिखी ईमेल पर भेजें। बिश्नोइज्म पर आपके विचार 300 शब्दों में हमें जरूर लिख भेजें ।

Email: admin@bishnoisect.com, हमसे जुड़ने के लिए संपर्क करें- www.facebook.com/bishnoisect, www.youtube.com/bishnoisect, www.bishnoisect.com, Mobile/Whatsapp No. 09466758300

GURU JAMBHESHWAR
SR. SECONDARY SCHOOL

मुख्य विशेषताएँ

- खुले व हवादार कक्षा कक्ष
- सुसज्जित पुस्तकालय
- अनुभवी व प्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाएँ
- उपकरणों से लैस विज्ञान प्रयोगशालाएँ
- विद्यालय परिसर में ही खेल के मैदान
- दूसरे विद्यालयों की अपेक्षा कम फीसें
- नन्हें बच्चों के खेल के लिए सभी प्रकार के झूले व खिलौने उपलब्ध
- अच्छी परिवहन सुविधाएँ
- विद्यार्थियों के नियमित सर्वांगीण विकास पर पूरा बल

ADMISSION OPEN
For Nursery to XII

Jawahar Nagar Hisar

7015730783, 9315117297   gurujambheshwar029@gmail.com

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

Our Special Features :-

- A School with Different Learning System & Sports Academy
- Smart Infrastructure with Computer Based Education & Language Labs
- Activity Based Learning & Preparing Students for Competitive Exams
- Dynamic Education System for Overall Development of Students
- Creative Teaching & Learning Methodologies
- Robust Library, Exclusive Labs, Music Room
- Extensive Co-Curricular Activities
- Well Qualified & Experienced Staff
- Peaceful Environment for Learning
- Sports Grounds & Swimming Pool
- Student Teacher ratio 25:1
- Playway Method of Teaching

FOR CLASSES PRE-NURSERY ONWARDS

Admission Open

from 1st March, 2017

Affiliated to CBSE

Limited Seats

Session 2017-18

Surya School

Chabarwal Road, Near Hanuman Mandir
SADALPUR, Mandi Adampur (Hisar)
Email: suryaschoolsadalpur@gmail.com

Cell : 9416272436, 8396847775
9991572436, 9467705436

Founder :
SH. HANS RAJ JAJUDA
(Member Zila Parishad, Hisar)

Director
DR. AJIT MALIK
M. : 9416272436

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 अप्रैल, 2017 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।